सतर्कता पत्रिका खंड 8: 2026-27

Vigilance Magazine Vol.8: 2026-27

एम एस टी सी
MSTC

सतर्कता जागरूकता सप्ताह
VIGILANCE AWARENESS WEEK 2026

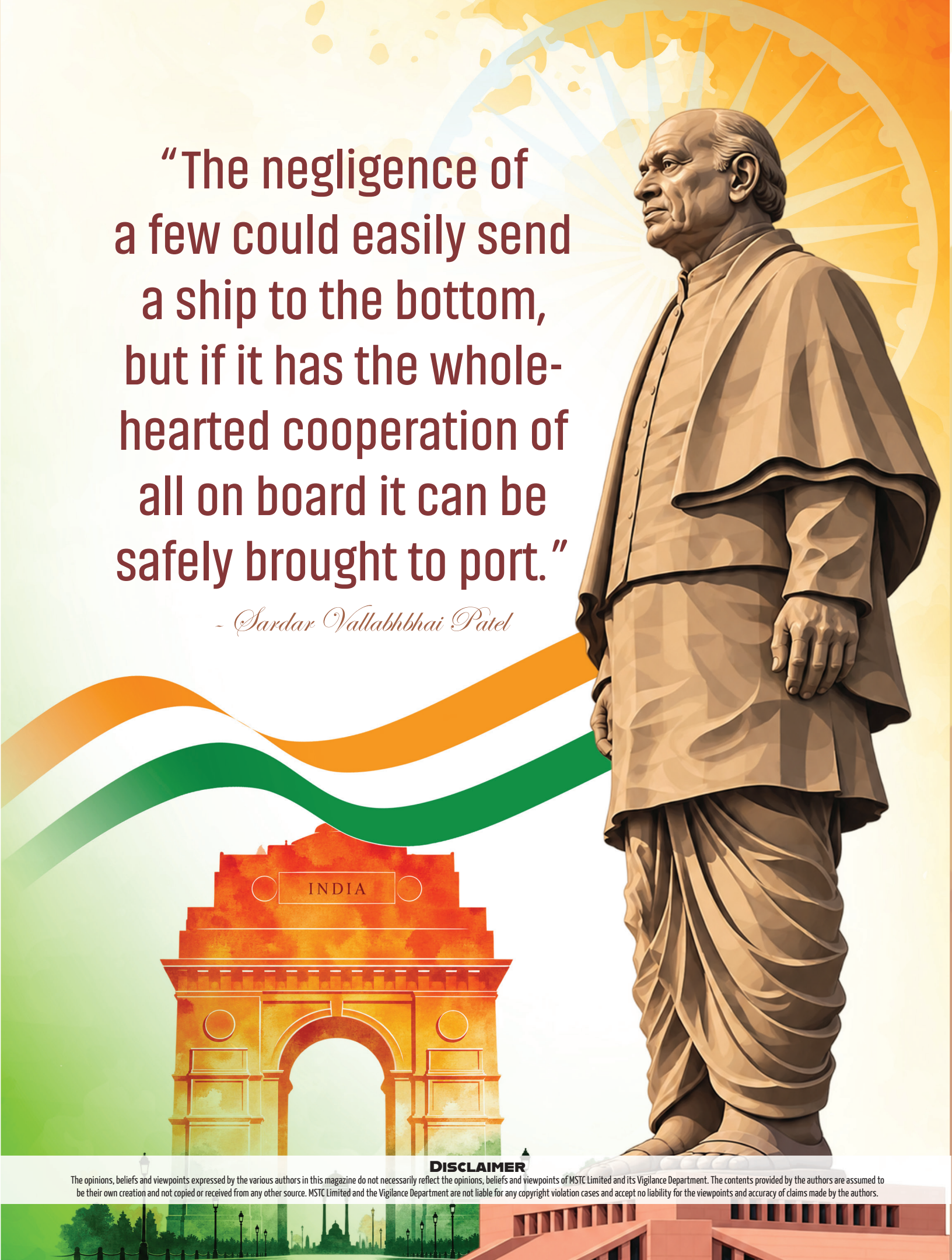
Jaagrat

राष्ट्र की अंतरात्मा को जगाने वाली एक सजग आवाज़



सत्यनिष्ठा से समृद्धि
Probity for Prosperity

A PUBLICATION OF VIGILANCE DEPARTMENT
सतर्कता विभाग, एमएसटीसी लिमिटेड | **Vigilance Department, MSTC Limited**



DISCLAIMER

The opinions, beliefs and viewpoints expressed by the various authors in this magazine do not necessarily reflect the opinions, beliefs and viewpoints of MSTC Limited and its Vigilance Department. The contents provided by the authors are assumed to be their own creation and not copied or received from any other source. MSTC Limited and the Vigilance Department are not liable for any copyright violation cases and accept no liability for the viewpoints and accuracy of claims made by the authors.

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

MESSAGE

I am pleased to know that the Central Vigilance Commission is observing Vigilance Awareness Week on the theme "Probity for Prosperity" from 26 October to 1 November 2026.

The theme "Probity for Prosperity" highlights the importance of integrity and honesty in promoting good governance and building a prosperous nation. Probity in public life strengthens transparency and accountability in governance. Public servants must discharge their duties with integrity and a strong sense of responsibility. I am confident that the observance of Vigilance Awareness Week will inspire public servants and citizens to uphold the highest standards of ethical values and work together towards building a corruption-free society.

I extend my greetings and warm wishes to the Central Vigilance Commission. I extend my best wishes for the success of "Vigilance Awareness Week 2026".

(Droupadi Murmu)

New Delhi
16 October 2026



सत्यमेव जयते

भारत के उपराष्ट्रपति
VICE-PRESIDENT OF INDIA

MESSAGE

I am pleased to know that the Central Vigilance Commission is observing the Vigilance Awareness Week as a tribute to Bharat Ratna Sardar Vallabhbhai Patelji.

I am glad that this year, the event is being commemorated from 26th October 2026 to 1st November 2026 on the theme, **सत्यनिष्ठा से समृद्धि: Probity for Prosperity.** The theme is apt, as probity and integrity are the key to achieving our goal of Viksit Bharat @ 2047. Ethical governance, strong institutions, and integrity and probity in public life are vital to the progress of the Nation.

On this note, I am reminded of a Kural by the Great Tamil Poet Thiruvalluvar - *இயல்புளிக் கோலோச்சும் மன்னவன் நாட்ட பெயலும் விளையுளும் தொக்கு.* In this Kural, Thiruvalluvar tells us that the king who governs by the law of the land is always blessed with prosperity.

Probity, integrity and adherence to the rule of law are the cornerstones of good governance. When governance is guided by these values, it creates the conditions for peace, progress and prosperity. Let us, therefore, strive to uphold these values in our public conduct and everyday lives, and contribute to building a prosperous, harmonious and developed Bharat. I urge all the citizens to actively partake in the events organized during the vigilance awareness week.

I am confident that this Vigilance Awareness Week will motivate the citizens to imbibe the principles of ethics and integrity in their daily lives.

I extend my best wishes to all of you for the successful observance of Vigilance Awareness Week.

Always in the service of the Motherland!

(C.P. Radhakrishnan)

New Delhi
October 23, 2026

सत्यमेव जयते

प्रधानमंत्री
Prime Minister
संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि केंद्रीय सतर्कता आयोग 26 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2026 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन कर रहा है। इस अवसर पर आयोग तथा इस अभियान से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं।

इस वर्ष की थीम 'सत्यनिष्ठा से समृद्धि' सुशासन और राष्ट्र की समृद्धि के बीच गहरे संबंध को अभिव्यक्त करती है। सत्यनिष्ठा से यह सुनिश्चित होता है कि सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग जनहित में हो, विकास के अवसर व्यापक हों और शासन के प्रति नागरिकों का विश्वास सुदृढ़ बने। आर्थिक विकास को गति देने, निवेश के लिए अनुकूल वातावरण बनाने और विकास का लाभ प्रत्येक नागरिक तक पहुंचाने में निष्पक्ष और उत्तरदायी प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

पिछले एक दशक में शासन व्यवस्था को प्रभावी, पारदर्शी और जवाबदेह बनाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। प्रौद्योगिकी के उपयोग, प्रक्रियाओं के सरलीकरण और व्यवस्थागत सुधारों के माध्यम से पारदर्शिता को शासन का अभिन्न अंग बनाने का प्रयास किया गया है। डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर से सरकारी सहायता सीधे लाभार्थियों तक पहुंचाने की व्यवस्था सुदृढ़ हुई है। सरकारी ई-मार्केटप्लेस और ई-प्रोक्योरमेंट ने सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता तथा प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम में संशोधन भी भ्रष्टाचार के विरुद्ध हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इन प्रयासों से सरकारी सेवाओं और सुविधाओं तक लोगों की पहुंच आसान हुई है, व्यवस्था के प्रति भरोसा बढ़ा है और उन्हें यह विश्वास मिला है कि सरकारी योजनाओं का लाभ पारदर्शी तरीके से उन तक पहुंच सकता है।

मुझे प्रसन्नता है कि इस दिशा में केंद्रीय सतर्कता आयोग भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता बढ़ाने, भ्रष्टाचार की आशंकाओं को कम करने और सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा को मजबूत करने के लिए अपने प्रयासों से महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

इस वर्ष ग्राम सभाओं, व्याख्यानों, नाटकों तथा विद्यालयों, महाविद्यालयों और अन्य संस्थानों में आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से सत्यनिष्ठा का संदेश व्यापक स्तर तक पहुंचाने का प्रयास सराहनीय है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता तभी सार्थक होती है, जब वह दैनिक आचरण और कार्यसंस्कृति का हिस्सा बने।

विकसित भारत की यात्रा में सत्यनिष्ठा और उत्तरदायित्व का विशेष महत्व है। शासन की प्रत्येक व्यवस्था में इन मूल्यों को आत्मसात करना सुशासन को सुदृढ़ करने और जनविश्वास बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मुझे विश्वास है कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह इस सामूहिक प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करेगा। एक बार फिर सतर्कता जागरूकता सप्ताह की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
आश्विन 30, शक संवत् 1948
22 अक्टूबर, 2026

सत्यमेव जयते

केन्द्रीय सतर्कता आयोग
CENTRAL VIGILANCE COMMISSION

सतर्कता भवन, जी.पी.ओ. कॉम्पलैक्स,
ब्लॉक–ए, आई.एन.ए., नई दिल्ली–110023
Satarkta Bhawan, G.P.O. Complex,
Block A, INA, New Delhi-10023

सं./No.....026/VGL/052.....

दिनांक / Dated.....23.10.2026.....

MESSAGE

VIGILANCE AWARENESS WEEK (26th October to 1st November 2026)

Central Vigilance Commission observes Vigilance Awareness Week (VAW) every year during the week in which the birth anniversary of Bharat Ratna Sardar Vallabhbhai Patel falls as a means of spreading awareness among all citizens and stakeholders regarding the adverse effects of corruption and the need to uphold integrity and probity.

This year, Vigilance Awareness Week is being observed from **26th October to 1st November 2026** on the theme:

"सत्यनिष्ठा से समृद्धि"

"Probity for Prosperity"

The theme underscores the fact that ethical conduct and integrity are vital for the social and economic progress of our country. Probity in public life, transparency and accountability are the pillars of public trust. All citizens, public servants and other stakeholders must collectively endeavour to combat corrupt practices and commit themselves to ethical values and honesty.

Over the years, the Commission has laid emphasis on preventive vigilance, systemic improvements and capacity building as essential elements for strengthening vigilance administration. To this end, a three-month preventive vigilance campaign is being undertaken from **17thAugust to 16thNovember 2026**, focusing on the disposal of pending complaints, timely implementation of pending cases, capacity-building programmes, digital initiatives and contract management. These initiatives are aimed at reducing opportunities for corruption, strengthening internal controls and promoting transparency in the governance system.

The Commission solicits active participation of all citizens and public servants in the efforts towards combating corruption and making integrity and accountability the cornerstone of our institutions.

(Praveen Vashista)
Vigilance Commissioner

(A.S. Rajeev)
Central Vigilance Commissioner



श्री मनोबेंद्र घोषाल

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

Shri Manobendra Ghoshal

CHAIRMAN AND MANAGING DIRECTOR

संदेश

किसी भी संगठन की वास्तविक पहचान केवल उसकी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उन मूल्यों और सिद्धांतों से होती है, जिनके आधार पर वह अपने दायित्वों का निर्वहन करता है। सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जवाबदेही ऐसे मूलभूत मूल्य हैं, जो संस्थागत विश्वसनीयता को सुदृढ़ करने के साथ-साथ राष्ट्र की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2026 का विषय **'सत्यनिष्ठा से समृद्धि'** अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रेरणादायी है। यह हमें स्मरण कराता है कि वास्तविक समृद्धि केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि नैतिक आचरण, न्यायसंगत निर्णय, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और जनहित के प्रति प्रतिबद्धता से प्राप्त होती है।

एमएसटीसी जैसे प्रौद्योगिकी-संचालित संगठन में तकनीकी दक्षता के साथ नैतिक मूल्यों एवं सुशासन के सिद्धांतों का पालन विशेष महत्व रखता है। सतर्कता का उद्देश्य केवल अनियमितताओं की पहचान करना नहीं, बल्कि ऐसी सकारात्मक कार्यसंस्कृति विकसित करना भी है, जहाँ प्रत्येक कार्य में निष्पक्षता एवं उत्तरदायित्व सुनिश्चित हो।

इसी भावना के अनुरूप सतर्कता विभाग द्वारा **'जाग्रत' पत्रिका के आठवें** संस्करण का प्रकाशन एक सराहनीय पहल है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपने प्रेरणादायी लेखों एवं विचारों के माध्यम से नैतिक चेतना जागृत करने और एक सुदृढ़ कार्यसंस्कृति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस सार्थक प्रयास के लिए सतर्कता विभाग एवं सभी सहयोगियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आइए, **26 अक्टूबर से 01 नवंबर, 2026** तक आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर हम सभी अपने कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक करने का संकल्प लें, क्योंकि सत्यनिष्ठ आचरण से ही सुदृढ़ संस्थानों की नींव रखी जाती है और सुदृढ़ संस्थान ही एक सशक्त एवं समृद्ध राष्ट्र के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

जय हिंद!

स्थान: नई दिल्ली
अक्टूबर, 2026



श्री अमित कुमार गुप्ता, आईआरएसएमई, (2008)

मुख्य सतर्कता अधिकारी

Shri Amit Kumar Gupta, IRSME(2008)

CHIEF VIGILANCE OFFICER

संदेश

सतर्कता जागरूकता सप्ताह हमें सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता एवं जवाबदेही के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता को पुनः दोहराने का अवसर प्रदान करता है। वर्ष 2026 की थीम "सत्यनिष्ठा से समृद्धि" इस तथ्य को सटीक रूप से रेखांकित करती है कि नैतिक आचरण एवं सुशासन, सतत विकास, संस्थागत विश्वसनीयता और जनविश्वास के आधारस्तंभ हैं।

निवारक सतर्कता को केवल प्रक्रियात्मक अनुपालन तक सीमित न रखकर, इसे हमारी संगठनात्मक संस्कृति का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है। केंद्रीय सतर्कता आयोग के निवारक सतर्कता अभियान में लंबित शिकायतों एवं मामलों का समयबद्ध निस्तारण, क्षमता निर्माण, डिजिटल पहलों को बढ़ावा देना तथा संविदा प्रबंधन को प्रभावी बनाना प्रमुख रूप से शामिल है।

एमएसटीसी लिमिटेड में प्रत्येक व्यावसायिक लेन-देन, प्रशासनिक निर्णय एवं आधिकारिक कार्य में सत्यनिष्ठा और नैतिकता का पालन सर्वोपरि होना चाहिए। मैं सभी कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे प्रत्येक कार्य में उचित सावधानी एवं समुचित जाँच-पड़ताल सुनिश्चित करें, व्यवस्था में विद्यमान कमियों एवं कमजोरियों की पहचान करें तथा किसी भी संदिग्ध अनियमितता की सूचना निर्धारित माध्यमों से दें। यद्यपि प्रौद्योगिकी, पारदर्शिता एवं कार्यों की निगरानी और अनुरेखण की क्षमता को बढ़ाती है, तथापि इसकी प्रभावशीलता अंततः प्रत्येक व्यक्ति की जवाबदेही, विवेकपूर्ण निर्णय क्षमता तथा व्यावसायिक नैतिकता पर निर्भर करती है।

सभी कर्मचारियों से अपेक्षा की जाती है कि वे व्यावसायिक कार्यों के निष्पादन में निर्धारित नियमों एवं प्रक्रियाओं का अक्षरशः पालन करने के साथ-साथ उनकी मूल भावना का भी अनुपालन सुनिश्चित करें। उन्हें ई-कॉमर्स मैनुअल एवं क्रय मैनुअल के प्रावधानों के अनुरूप कार्य करना चाहिए तथा निर्धारित शक्ति प्रत्यायोजन अनुसूची (Schedule of Powers) का कड़ाई से पालन करना चाहिए। प्रत्येक निर्णय में समुचित जाँच-पड़ताल, निष्पक्षता एवं अटूट सत्यनिष्ठा परिलक्षित होनी चाहिए, ताकि एमएसटीसी के हितों की रक्षा हो तथा उसकी प्रतिष्ठा अक्षुण्ण बनी रहे।

मैं सभी कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित गतिविधियों में पूर्ण उत्साह एवं प्रतिबद्धता के साथ भाग लें तथा इसके मूल भाव को पूरे वर्ष अपने कार्यों एवं आचरण में बनाए रखें। आइए, हम सभी मिलकर निवारक सतर्कता को सुदृढ़ करें, नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करें तथा ईमानदारी, निष्पक्षता एवं जवाबदेही पर आधारित कार्य-संस्कृति का निर्माण करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

स्थान: नई दिल्ली
अक्टूबर, 2026



श्रीमती भानु कुमार

निदेशक (वाणिज्यिक)

Smt. Bhanu Kumar

Director (Commercial)

MESSAGE

Integrity is the cornerstone of good governance, while probity serves as the bedrock of sustainable prosperity. This year's Vigilance Awareness Week theme, **"सत्यनिष्ठा से समृद्धि / Probity for Prosperity,"** underscores the enduring importance of ethical conduct, transparency and accountability in fostering sustainable growth and public trust.

As a public sector enterprise delivering e-Commerce services, MSTC bears a vital responsibility to uphold the highest standards of fairness, impartiality and transparency in its commercial operations. Technology-enabled platforms, robust internal controls and continual process enhancement are instrumental in minimising human discretion, ensuring a level playing field and reinforcing stakeholder confidence. Every commercial decision must be guided by established procedures, prudent risk management and accountability to safeguard organisational interests and uphold the highest standards of probity.

As members of the MSTC family, we must collectively embed integrity in our everyday actions and decisions. When probity underpins our processes, transparency strengthens our relationships and accountability informs our conduct, we lay the foundation for sustainable and inclusive prosperity.

I congratulate the Vigilance Department on the publication of the eighth edition of MSTC's annual vigilance magazine, "**Jaagrat**," which serves as a meaningful platform for fostering ethical awareness and strengthening the ethos of good governance. I extend my best wishes for the successful observance of Vigilance Awareness Week and urge every employee to uphold integrity as an unwavering principle in the pursuit of organisational excellence.

सत्यनिष्ठा से समृद्धि की ओर।

Place: New Delhi
October, 2026



श्री सुब्रत सरकार

निदेशक (वित्त)

Shri Subrata Sarkar

Director (Finance)

संदेश

किसी भी राष्ट्र की वास्तविक समृद्धि उसके संसाधनों के सदुपयोग, पारदर्शी कार्यप्रणाली और सत्यनिष्ठ आचरण में निहित है। सत्यनिष्ठा सुशासन, जवाबदेही एवं सतत विकास की आधारशिला है। इसी भावना के अनुरूप सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2026 की थीम "**सत्यनिष्ठा से समृद्धि**" निर्धारित की गई है।

भ्रष्टाचार नामक वायरस हमारे संसाधनों को अपना शिकार बनाती है, फलस्वरूप आकांक्षित समृद्धि के लक्ष्य से हम पिछड़ जाते हैं। सत्य का स्वरूप सूर्य की रश्मि के समान ओजस्वी एवं दिव्यमान होता है। उसके प्रखर प्रताप से भ्रष्टाचार रूपी वायरस का नामोनिशान मिट जाता है। अतः सत्यनिष्ठा ही हम सभी नागरिकों का एकमात्र ध्येय होना चाहिए।

इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह 26 अक्टूबर से 01 नवंबर, 2026 तक मनाया जा रहा है। केंद्रीय सतर्कता आयोग के मार्गदर्शन में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह हमें भ्रष्टाचार के प्रति सजग रहने तथा कार्य-संस्कृति में नैतिकता, उत्तरदायित्व और पारदर्शिता को सुदृढ़ करने के संकल्प को दोहराने का अवसर प्रदान करता है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सतर्कता विभाग द्वारा "जाग्रत" पत्रिका का आठवाँ संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। इस सार्थक पहल के लिए सतर्कता विभाग को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आशा है कि यह पत्रिका सत्यनिष्ठा, नैतिकता और सतर्कता के प्रति जागरूकता बढ़ाने में प्रेरणादायी भूमिका निभाएगी।

"**ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है**" - इस सिद्धांत को अपने आचरण का आधार बनाकर आइए, सत्यनिष्ठा को अपना संकल्प बनाएँ और समृद्ध एवं सशक्त राष्ट्र के निर्माण में सहभागी बनें।

भारत माता की जय,

स्थान: नई दिल्ली
अक्टूबर, 2026

सु ब्र त सरकार

Probity as a Driver of Prosperity



विनोद प्रजापति | VINOD PRAJAPATI
उप महाप्रबंधक | Deputy General Manager

Probity means honesty, integrity, fairness, and adherence to ethical principles in personal and professional life. Prosperity refers not only to economic growth but also to the overall well-being of society. The theme "Probity for Prosperity" highlights the importance of ethical conduct, transparency, and accountability in building a developed, inclusive, and corruption-free nation. Therefore, probity must become an essential part of governance, business, and everyday life.

Probity: The Foundation of Good Governance

Good governance depends on honesty, transparency, accountability, and fairness. Public officials entrusted with public resources must perform their duties impartially and in the larger interest of society. Decisions should be based on merit, rules, and public welfare rather than personal gain or favouritism. Transparent procedures, effective audits, digital services, timely grievance redressal, and strong vigilance mechanisms can reduce opportunities for corruption. At the same time, ethical leadership is essential to create an environment where integrity is rewarded and misconduct is addressed fairly.



Probity as a Driver of Prosperity

Integrity and economic prosperity are closely connected. Corruption diverts resources meant for education, healthcare, infrastructure, and welfare programmes. It discourages investment, increases the cost of doing business, and prevents deserving people from receiving opportunities. Conversely, a culture of probity promotes efficient use of public funds, fair competition, investor confidence, and sustainable development. When institutions function honestly, citizens have greater confidence in government, businesses operate on a level playing field, and the benefits of growth can reach a wider section of society. Thus, prosperity achieved through ethical means is more sustainable and equitable than growth driven by dishonesty and exploitation.

Role of Citizens in Promoting Integrity

The responsibility of ensuring probity does not rest solely with vigilance departments or government officials. Every citizen has a role to play. Refusing to offer or accept bribes, following rules, demanding proper receipts, reporting suspected corruption through authorised channels, and treating public resources responsibly are practical steps towards a corruption-free society. Educational institutions and families must instil values such as honesty, discipline, fairness, and respect for the law in young people. Organisations should establish clear ethical standards and protect individuals who report wrongdoing in good faith. Technology can further strengthen transparency through digital payments, online applications, electronic procurement, and traceable administrative processes. However, technology must be supported by ethical behaviour, effective oversight, and appropriate safeguards.

Conclusion

"Probity for Prosperity" is more than a slogan; it is a guiding principle for national development. Economic progress without integrity can create inequality and weaken institutions, whereas prosperity founded on honesty and accountability benefits society. On this occasion of Vigilance Awareness Week, let us renew our commitment to integrity in thought, word, and action. Every honest decision, every refusal to participate in corruption, and every effort to uphold fairness contributes to a stronger nation.

When probity becomes a way of life, prosperity becomes a shared achievement.

समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा — एमएसटीसी के संदर्भ में



शशि कान्त तिवारी | Shashi Kant Tiwari
उप महाप्रबंधक | Deputy General Manager

"समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा" की चर्चा होते ही हमारा ध्यान सामान्यतः सार्वजनिक व्यवहार में ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही की ओर जाता है। सार्वजनिक क्षेत्र के किसी उपक्रम में, जहाँ कार्य का बड़ा हिस्सा जनसंपर्क और व्यावसायिक लेन-देन से जुड़ा हो, यह स्वाभाविक भी है। लेकिन क्या हमने कभी इस विचार को अपने संगठन के भीतर, अपने कर्मचारियों के साथ होने वाले व्यवहार के संदर्भ में भी परखा है? क्या हम सत्यनिष्ठा के मूल भाव को उन मानव संसाधनों के विकास और कल्याण में उतार रहे हैं, जिनके प्रयासों से संगठन की समृद्धि संभव होती है?

सार्वजनिक व्यवहार में सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करने के लिए अनेक नियम, प्रक्रियाएँ, मानक और निगरानी तंत्र उपलब्ध हैं। कर्मचारियों के संबंध में भी सेवा नियम और नीतियाँ हैं, किंतु निष्पक्षता, संवेदनशीलता और सम्मानपूर्ण व्यवहार को केवल नियमों के माध्यम से सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। इसके लिए संगठन की कार्यसंस्कृति और प्रबंधन के दैनिक आचरण में इन मूल्यों का दिखाई देना आवश्यक है।

एक स्वस्थ कार्यस्थल वही है जहाँ कर्मचारियों को प्रबंधन पर विश्वास हो, समान परिस्थितियों में समान व्यवहार मिले और उनकी समस्याओं को सहानुभूति के साथ सुना जाए। कार्य के आवंटन, अवसरों, मूल्यांकन और उपलब्धियों की पहचान में निष्पक्षता होनी चाहिए। कर्मचारी के पद या व्यक्तिगत निकटता से अधिक महत्त्व उसके योगदान, क्षमता और परिस्थितियों को दिया जाना चाहिए।

कर्मचारियों से संबंधित प्रशासनिक निर्णयों में भी सत्यनिष्ठा का स्पष्ट प्रतिबिंब होना चाहिए। पदोन्नति, स्थानांतरण तथा अन्य सेवा संबंधी मामलों में निर्णय निर्धारित मानदंडों के आधार पर, पारदर्शी ढंग से और समय पर लिए जाएँ। अनावश्यक विलंब और अनिश्चितता कर्मचारी के मनोबल के साथ-साथ उसके पारिवारिक जीवन को भी प्रभावित करते हैं। निर्णयों के आधार और संबंधित प्रक्रियाओं की स्पष्टता कर्मचारियों में निष्पक्ष व्यवस्था के प्रति विश्वास बढ़ाती है।

कर्मचारियों को उपलब्ध लाभों, सुविधाओं और कल्याणकारी योजनाओं की पात्रता, शर्तों तथा उन्हें प्राप्त करने की प्रक्रिया की पूरी जानकारी सहज रूप से उपलब्ध कराई जाए। नीतियों में होने वाले परिवर्तनों की सूचना भी समय पर दी जाए, ताकि जानकारी के अभाव में कोई कर्मचारी अपने उचित लाभ से वंचित न रहे। पारदर्शिता का अर्थ केवल पूछे जाने पर जानकारी देना नहीं, बल्कि आवश्यक जानकारी सभी संबंधित कर्मचारियों तक स्वयं पहुँचाना भी है।

इसी प्रकार, कर्मचारियों को दिए गए आश्वासनों और किए गए वादों के प्रति जवाबदेही आवश्यक है। आश्वासन सोच-समझकर दिए जाएँ और उन्हें निर्धारित समय में पूरा करने के लिए ठोस कार्रवाई हो। यदि किसी कारणवश उन्हें पूरा करना संभव न हो, तो संबंधित कर्मचारी को समय रहते स्पष्ट कारणों से अवगत कराया जाए। कथनी और करनी में सामंजस्य ही प्रबंधन की विश्वसनीयता तथा कर्मचारियों के विश्वास को स्थायी आधार देता है।

प्रबंधन और वरिष्ठ अधिकारियों को कर्मचारियों के साथ संवाद एवं व्यवहार में उच्च मानक स्थापित करने चाहिए। शिष्ट भाषा, धैर्यपूर्वक सुनना, मतभिन्नता का सम्मान और गरिमा के साथ अपनी बात रखना इन मानकों के मूल तत्व हैं। किसी त्रुटि पर सुधारात्मक मार्गदर्शन दिया जाए और आलोचना व्यक्ति के बजाय कार्य तक सीमित रहे। सार्वजनिक रूप से अपमानित करना, कटु टिप्पणी करना या पद के प्रभाव से अनावश्यक दबाव बनाना विश्वास को कमजोर करता है। वरिष्ठों का व्यवहार ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करे, जिससे सम्मान, संवेदनशीलता और निष्पक्षता पूरे संगठन की स्वाभाविक कार्यसंस्कृति बन जाए।

कर्मचारियों में यह भावना विकसित होनी चाहिए कि संगठन उनका अपना है और उसकी सफलता में उनकी सार्थक भूमिका है। वे प्रतिदिन केवल दायित्व निभाने के लिए नहीं, बल्कि उत्साह और उद्देश्य के साथ कार्यस्थल आएँ। उन्हें यह भरोसा भी हो कि किसी कार्य संबंधी या व्यक्तिगत कठिनाई के समय वे बिना भय और संकोच के प्रबंधन से संवाद कर सकते हैं तथा उनकी बात को सम्मान और गोपनीयता के साथ सुना जाएगा। हर समस्या का समाधान संभव न भी हो, तो भी निष्पक्ष सुनवाई

और संवेदनशील प्रतिक्रिया विश्वास को मजबूत करती है।

मानव संसाधन किसी संगठन की ऐसी विशिष्ट संपदा हैं, जिनमें भावनाएँ, आकांक्षाएँ और आत्मसम्मान होता है। उनकी प्रतिबद्धता, रचनात्मकता और सामूहिक प्रयास किसी संस्था को उत्कृष्ट बना सकते हैं; वहीं निरंतर उपेक्षा और अन्याय की अनुभूति उनकी प्रेरणा तथा संगठन की कार्यक्षमता को कमजोर कर सकती है। कर्मचारियों का सम्मान और कल्याण, इसलिए, संगठन के भविष्य में किया गया एक सार्थक निवेश है।

समय की आवश्यकता है कि हम आत्ममंथन करें—क्या सत्यनिष्ठा हमारे बाहरी व्यवहार तक सीमित है, या वह हमारे आंतरिक संबंधों में भी उतनी ही स्पष्ट है? एमएसटीसी में "समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा" का वास्तविक अर्थ तभी साकार होगा, जब कर्मचारियों का सम्मान, विकास और कल्याण संगठन की प्रगति का अभिन्न अंग बने। कर्मचारियों और संगठन की समृद्धि एक-दूसरे से जुड़ी है; विश्वास, निष्पक्षता और जवाबदेही इस साझी समृद्धि की आधारशिला हैं।

"संतुष्ट मानव संसाधन से समृद्ध संगठन और समृद्ध संगठन से विकसित भारत—आइए, इस भावना का प्रसार करें।"

अल्लामा इक़बाल के शब्दों में—

"अफ़राद के हाथों में है अक़वाम की तक़दीर,
हर फ़र्द है मिल्लत के मुक़द्दर का सितारा।"

भावार्थ: राष्ट्र का भविष्य उसके लोगों के हाथों में है;
प्रत्येक व्यक्ति उसकी उन्नति का एक सितारा है।

PRIZE WINNING SLOGANS OF MSTC EMPLOYEES' 2025

1ST

"सतकर्ता से बड़ी कोई वसीयत नहीं होती,
साझा जिम्मेदारी से बढ़कर कोई विरासत नहीं होती|"

संजय आर शाह, पति जागृति संजयकुमार शाह, ईए, जीआरओ
SANJAY R SHAH, H/O JAGRUTI SANJAYKUMAR SHAH, EA, GRO

The Foundation of True Wealth – Probity for Prosperity



किरण कुमार चोडावरपु | KIRAN KUMAR CHODAVARAPU
मुख्य प्रबंधक | Chief Manager

In today's rapidly evolving corporate landscape, the pursuit of growth is often viewed through the narrow lens of financial margins and market expansion. However, true, sustainable prosperity is built on a much stronger foundation: probity. Probity extends beyond mere compliance with rules; it is the absolute commitment to honesty, ethical conduct, and transparency in every action we take.

When an organization embraces probity, it cultivates an environment of profound trust. Trust is the currency that dictates the strength of relationships with stakeholders, clients, and colleagues. A business that operates with unwavering integrity naturally attracts loyal partners and dedicated employees. People want to invest their time, resources, and careers in institutions that stand firmly by their ethical commitments. This trust translates directly into long-term prosperity.

Conversely, short-term gains achieved through compromised ethics often lead to long-term ruin. The corporate world is filled with cautionary tales of organizations that prioritized immediate profit over ethical practices, only to face reputational damage, legal consequences, and eventual collapse. Wealth generated without integrity is inherently fragile.

Probity also drives internal efficiency. In a transparent workplace where ethical standards are upheld, employees feel valued and secure. This psychological safety encourages innovation, open communication, and proactive problem-solving. When individuals know that their organization operates fairly, their morale increases, leading to higher productivity and collaborative success. Furthermore, ethical decision-making streamlines operations by eliminating the hidden costs of corruption, fraud, and misallocation of resources.

As we navigate our daily responsibilities, we must remember that every decision, no matter how small, contributes to the larger culture of our workplace. By holding ourselves accountable and championing transparency, we do more than just protect our organization from risk—we actively pave the way for its thriving future. Probity is not a restriction on our growth; it is the very catalyst that ensures our prosperity is genuine, resilient, and enduring.





सत्यनिष्ठा से समृद्धि

अभिषेक कुमार चौधरी | **ABHISHEK KR. CHAUDHARY**
मुख्य प्रबंधक | Chief Manager

सत्यनिष्ठा की ज्योति जलाकर,
हम पथ अपना नया बनाएंगे।
कर्मठता का दीप जलाकर,
भारत का उत्थान कराएंगे।

झूठ और छल के पाश को त्यागकर,
धर्म-नीति का मार्ग अपनाएंगे।
हम भारतीय सीना ताने,
सत्यपथ पर बढ़ते जाएंगे।

मेहनत के पसीने से सींचकर,
इस माटी को स्वर्ण बनाएंगे।
नीति और निष्ठा के बल पर,
नया भारत हम रच जाएंगे।

सत्य, त्याग और श्रम की शक्ति,
भारत का गौरव बढ़ाएगी।
हर भारतीय की सत्यनिष्ठा,
समृद्धि घर-घर ले आएगी।



सब अच्छा होगा

आनन्द विश्वकर्मा | ANNAND VISHWAKARMAA
मुख्य प्रबंधक | Chief Manager

सब अच्छा होगा, बस सत्य का साथ निभाने देना। राह कठिन हो, चाहे जितनी,
ईमान का दीप जलाने देना।

कहने से पहले सब बुरा होने देना, मुश्किलों को भी कुछ कहने देना। तुम ढूँढ़
ही लोगे अपनी मंज़िल, बस ख़ुद को सच की राह पर चलने देना।

आधे-अधूरे ख़्वाब अक्सर रास्तों में खो जाते हैं, और छोटी-सी सुविधा के
पीछे बड़े-बड़े उसूल खो जाते हैं।

न झूठ से राह आसान करना, न सच से कभी किनारा करना। लाभ मिले या
हानि हो कोई, ईमान से अपना काम करना।

याद रखो, अँधेरों के बाद सूरज को भी निकलना पड़ता है, समृद्धि के शिखर
पर पहुँचने से पहले सत्यनिष्ठा की राह पर चलना पड़ता है।

तो रुकना, गिरना, फिर सँभलना, पर सच की राह से मत बदलना। पद हो,
प्रतिष्ठा हो या अधिकार, ईमान रहे जीवन का आधार।

क्योंकि सच्ची समृद्धि धन से नहीं, विश्वास और चरित्र से आती है।
जहाँ सत्यनिष्ठा जीवन का मूल हो, वहीं प्रगति स्थायी बन जाती है।

तो यह तुम्हारी ही कहानी है, इसे ईमानदारी से लिखते चलो। हर पन्ने पर सत्य
की छाप रहे, और गर्व से जीवन जीते चलो।

सत्य की राह कठिन सही, पर यही सच्ची जीत है, सत्यनिष्ठा से समृद्धि ही,
उज्ज्वल भविष्य की रीत है।

Probity for Prosperity



सत्य प्रकाश शॉ | SATYA PRAKASH SHAW
मुख्य प्रबंधक | Chief Manager

As such, Probity & Prosperity, the two words are inter-linked. As, last shloka from Bhagavad Gita, Chapter 18, Verse 78 states :

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ७८

This verse encapsulates the exact relationship between moral integrity (probity) and sustainable success (prosperity). Prosperity (bhooti) cannot exist permanently without a foundation of moral probity - integrity (neeti). When human effort (represented by Arjun) aligns with divine righteousness (represented by Lord Krishna), holistic prosperity is achieved that is both ethical and enduring.

Probity is the foundation of trust, transparency and good governance. It means conducting every activity with integrity, fairness, accountability and adherence to established principles. And, in an economy where trust, transparency and technology increasingly determine the quality of transactions, MSTC occupies a distinctive position.

The essence of "Probity for Prosperity" is particularly relevant to MSTC. Probity strengthens systems; strong systems promote efficiency; efficiency creates value; and responsible value creation contributes to organisational and national prosperity.

MSTC has evolved into a technology-driven organisation providing e-commerce and transaction platforms across diverse sectors. Through its electronic auction and other digital services, MSTC facilitates transparent transactions and price discovery for various categories of goods and services, including scrap, surplus materials and other assets. The very nature of such operations makes transparency, fairness and integrity fundamental to maintaining stakeholder confidence. For MSTC, probity has an even greater significance because the organisation operates at the intersection of public resources, technology, commerce and multiple stakeholders. Probity is therefore not merely a vigilance principle; it is a business imperative for sustainable prosperity.

In an e-auction-driven business environment, every stage of the process—from registration and catalogue preparation to bidding, price discovery, payment and delivery—must operate within a robust framework of transparency and accountability. A well-designed system reduces discretion, creates an audit trail and enables equal opportunity to eligible participants.

Digital transformation provides significant opportunities in this regard. Automated workflows, electronic approvals, system-generated audit trails, data analytics and exception reporting can make transactions more transparent and reduce the possibility of unauthorised intervention. At the same time, cybersecurity and protection of confidential information are becoming increasingly important components of vigilance in a digital organisation. A secure digital platform is an important pillar of transparent governance. Technology, when combined with strong ethical practices, becomes a powerful instrument of preventive vigilance.

For MSTC, preventive vigilance should therefore extend beyond detecting irregularities. It should focus on continuously identifying vulnerabilities in processes and systems and addressing them proactively. Periodic review of auction procedures, segregation of duties, system-based approvals, access controls, vendor due diligence, conflict-of-interest safeguards and data analytics can help minimise operational and integrity risks.

As the foundational verses from the Udyoga Parva of the Mahabharata where great Mahatma Vidura explains the mechanics of ethical prosperity to King Dhritarashtra:

धर्ममेवाभिपद्यस्व धर्मो जयति निश्चितम्।
न धर्मोऽपचितो हन्ति न हतो हन्ति धर्मवित्॥

Means : Practice virtue (dharma) from the very outset. For ultimate prosperity is born out of righteousness; it is never divorced from truth and ethical conduct.

Probity is equally important in procurement and vendor management. Objective eligibility criteria, transparent tendering, proper evaluation, documented decision-making and effective contract monitoring help ensure that organisational resources are utilised efficiently. Fairness to all eligible participants strengthens competition, improves value for money and protects the credibility of the organisation.

Every employee has a role in maintaining this culture of integrity. A vigilance-conscious employee does not merely comply with rules; he or she also identifies unusual patterns, questions unexplained deviations, protects confidential information, avoids conflicts of interest and reports genuine concerns through appropriate channels. Ethical conduct in routine decisions can prevent significant risks from developing into major irregularities.

MSTC's responsibility towards public resources also extends to ensuring that its processes contribute to maximum value realisation. Efficient disposal mechanisms, transparent price discovery and wider participation can help unlock value from assets that might otherwise remain underutilised. Thus, probity and business efficiency are not competing objectives. Rather, transparent processes can create greater efficiency, better value and stronger stakeholder confidence.

Chanakya Neeti also strongly supports the idea that probity (integrity, honesty, and uprightness) is the foundational pillar of lasting prosperity. In his teachings on governance, ethics, and wealth (Arthashastra and Chanakya Niti), Chanakya repeatedly emphasizes that wealth acquired through unrighteous means is short-lived and destructive, whereas ethical conduct ensures sustainable success.

For Chanakya, prosperity is not an isolated pursuit; it is a byproduct of doing the right thing.

सुखस्य मूलं धर्मः। धर्मस्य मूलं अर्थः।
अर्थस्य मूलं राज्यं। राज्यस्य मूलं इन्द्रिय जयः।
इन्द्रियाजयस्य मूलं विनयः। विनयस्य मूलं वृद्धोपसेवा॥
सुख का मूल है, धर्म। धर्म का मूल है, अर्थ।
अर्थ का मूल है, राज्य। राज्य का मूल है,
इन्द्रियों पर विजय। इन्द्रियजय का मूल है,
विनय। विनय का मूल है, वृद्धों की सेवा।
— कौटिल्य द्वारा रचित चाणक्यसूत्र 1-6

Vigilance cannot be the responsibility of the Vigilance Department alone. It must become a shared organisational responsibility involving management and every employee. Integrity must be embedded in our processes, technology, decisions and everyday conduct.

Let us make probity a habit, transparency a process and accountability a culture. By protecting integrity in every transaction and every decision, we contribute not only to the prosperity of MSTC but also to the larger objective of building a transparent, efficient and developed India. Probity serves as a bridge between good governance and national prosperity. When integrity guides our actions and public resources are utilised responsibly, we do not merely prevent corruption—we contribute directly to building a stronger, more prosperous and developed India.

"Probity for Prosperity – Integrity in Every Transaction, Transparency in Every Decision."
Jai Hind.

INAUGURAL CEREMONY 2025





सत्यनिष्ठा से समृद्धि



अभिषेक कुमार कनौजिया | ABHISHEK KUMAR KANAUJIA
प्रबंधक | Manager

किसी राष्ट्र की समृद्धि का वास्तविक माप केवल आर्थिक वृद्धि नहीं है। उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि नागरिकों को संस्थाओं पर कितना विश्वास है और सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग कितनी निष्पक्षता से होता है। सत्यनिष्ठा जब व्यक्तिगत चरित्र से आगे बढ़कर संस्थागत कार्यसंस्कृति बन जाती है, तभी सुशासन की नींव सुदृढ़ होती है।

कॉर्पोरेट जगत में इन्फोसिस के सह-संस्थापक एन. आर. नारायण मूर्ति नेतृत्व के आचरण और सुशासन पर निरंतर बल देते रहे हैं। फरवरी 2026 के एक साक्षात्कार में उन्होंने सुशासन को कंपनी की दीर्घकालिक सफलता का आधार बताया। संदेश स्पष्ट है: संस्था की सफलता इससे नहीं आँकी जाती कि उसने कितना लाभ कमाया, बल्कि इससे आँकी जाती है कि वह लाभ किन मूल्यों के सहारे अर्जित किया गया।

सार्वजनिक जीवन में डॉ. मनमोहन सिंह ज्ञान, परिश्रम और नीतिगत उत्तरदायित्व की मिसाल हैं। 1991 के आर्थिक संकट में वित्त मंत्री के रूप में उन्होंने व्यापक सुधारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका उदाहरण सिखाता है कि सार्वजनिक पद के निर्णय तथ्यों और राष्ट्र के दीर्घकालिक हित पर आधारित हों, तात्कालिक सुविधा पर नहीं।

परंतु केवल अच्छे व्यक्तियों के भरोसे व्यवस्था नहीं चलती। ऐसी प्रणालियाँ चाहिए जो निष्पक्षता को स्वाभाविक विकल्प बना दें और मनमानी की गुंजाइश घटा दें। गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) ने ई-बिडिंग और रिवर्स ऑक्शन के माध्यम से सार्वजनिक खरीद में प्रतिस्पर्धा और पारदर्शिता बढ़ाई है। इसी दिशा में इस्पात मंत्रालय के अधीन सार्वजनिक उपक्रम एमएसटीसी लिमिटेड ने ई-नीलामी और ई-प्रोक्योरमेंट के जरिये स्क्रैप, खनिज और अन्य परिसंपत्तियों की बिक्री में खुली बोली की संस्कृति को मजबूत किया है, जहाँ मूल्य का निर्धारण बंद कमरों में नहीं, सार्वजनिक प्रतिस्पर्धा से होता है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) से सरकारी सहायता सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में पहुँचती है, जिससे बिचौलियों की भूमिका और अपात्र लाभार्थियों की संभावना घटती है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एस्टोनिया उल्लेखनीय उदाहरण है, जहाँ सरकारी निविदाओं, कानूनों और महत्वपूर्ण सूचनाओं को नागरिकों के लिए सुलभ बनाने पर जोर है। पारदर्शिता तभी प्रभावी होती है, जब सूचना तक पहुँच और निर्णयों की जवाबदेही व्यवस्था का अभिन्न अंग बन जाए।

फिर भी तकनीक अपने आप में पर्याप्त नहीं है। वह पारदर्शिता का साधन बन सकती है, पर उसे सार्थक बनाने के लिए मानवीय ईमानदारी अनिवार्य है। सार्वजनिक संस्थान के प्रत्येक कर्मचारी के लिए सत्यनिष्ठा का अर्थ है: नियमों का निष्पक्ष पालन, हितों के टकराव से दूरी, निर्णयों का उचित अभिलेखीकरण, और अनुचित दबाव के सामने भी कर्तव्य पर अडिग रहना।

अंततः समृद्धि का स्थायी मार्ग अधिक संसाधन जुटाने में नहीं, बल्कि उनका उपयोग अधिक ईमानदारी, निष्पक्षता और उत्तरदायित्व से करने में है। जब सत्यनिष्ठा व्यक्ति का संस्कार और संस्था की व्यवस्था, दोनों बन जाती है, तब विकास केवल आर्थिक उपलब्धि नहीं रहता; वह जनविश्वास की स्थायी पूँजी बन जाता है।

PRIZE WINNING SLOGANS OF MSTC EMPLOYEES' 2025

2ND

" Stay alert, stay united, vigilance is our shared call
Guarding our nation, protecting one and all."

प्रियंका देबनाथ, ईए, जीआरओ
PRIYANKA DEBNATH, EA, ERO

सत्यनिष्ठा से समृद्धि



अमित कुमार सिंह | AMIT KUMAR SINGH
प्रबंधक | Manager

~~~शुरुआत सदैव हमसे ही होती है~~~



अक्सर हम समृद्धि का अर्थ आर्थिक विकास, बेहतर सुविधाओं और बढ़ते संसाधनों से लगाते हैं। निस्संदेह, ये सभी किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक हैं। लेकिन क्या केवल आर्थिक उन्नति ही वास्तविक समृद्धि है? यदि विकास के साथ ईमानदारी, विश्वास और नैतिकता न हों, तो ऐसी प्रगति अधिक समय तक टिकाऊ नहीं रह सकती। वास्तव में, किसी भी समाज की स्थायी समृद्धि की नींव उसकी सत्यनिष्ठा में निहित होती है।

कार्यालय में काम करते हुए हम प्रतिदिन अनेक छोटे-बड़े निर्णय लेते हैं। किसी फाइल का निस्तारण, किसी प्रस्ताव पर विचार, किसी निविदा का मूल्यांकन या किसी नियम की व्याख्या — ये सभी सामान्य प्रशासनिक प्रक्रियाएँ प्रतीत हो सकती हैं। लेकिन इन्हीं अवसरों पर हमारी निष्पक्षता और नैतिक प्रतिबद्धता की वास्तविक परीक्षा होती है। कई बार किसी अनुचित कार्य को करने से इनकार करना अथवा किसी प्रक्रिया में आवश्यक पारदर्शिता बनाए रखना तत्काल सुविधाजनक नहीं होता, फिर भी यही निर्णय दीर्घकाल में संगठन के हित में सिद्ध होते हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में कार्य करने का दायित्व इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ लिए गए निर्णयों का संबंध केवल संगठन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सार्वजनिक संसाधनों और जनविश्वास से भी जुड़ा होता है। प्रत्येक कर्मचारी से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन निष्पक्षता, ईमानदारी और उत्तरदायित्व के साथ करे। नियमों का पालन केवल औपचारिक आवश्यकता नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करने का माध्यम है कि प्रत्येक निर्णय उचित आधार पर लिया जाए और किसी को अनुचित लाभ न मिले।

सतर्कता के संदर्भ में एक बात विशेष रूप से समझने योग्य है — अनियमितताओं को रोकना, उनके सामने आने के बाद कार्रवाई करने से कहीं अधिक प्रभावी है। स्पष्ट कार्यप्रणाली, पारदर्शी निर्णय, प्रभावी आंतरिक नियंत्रण और समय पर समीक्षा ऐसी व्यवस्था विकसित करने में सहायक हैं, जिसमें गलत कार्यों की संभावना कम हो। इसके साथ ही, कर्मचारियों में यह विश्वास भी होना चाहिए कि ईमानदारी और निष्पक्षता केवल अपेक्षित गुण नहीं, बल्कि संगठन की कार्यसंस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

मेरे विचार से, सतर्कता की शुरुआत किसी निरीक्षण या जाँच से नहीं, बल्कि उस क्षण से होती है जब हम अपने सामने आए किसी निर्णय में व्यक्तिगत सुविधा से ऊपर नियमों और नैतिक मूल्यों को स्थान देते हैं। इसके लिए किसी विशेष पद पर होना आवश्यक नहीं है। प्रत्येक कर्मचारी अपने दैनिक कार्यों में पारदर्शिता अपनाकर और अनुचित व्यवहार के प्रति सजग रहकर महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

अंततः, सत्यनिष्ठा कोई ऐसा मूल्य नहीं है जिसे केवल भाषणों या नारों तक सीमित रखा जाए। इसे अपने व्यवहार और निर्णयों में उतारना आवश्यक है। जब ईमानदारी व्यक्ति की आदत, संगठन की संस्कृति और प्रशासन की पहचान बन जाती है, तब विश्वास मजबूत होता है और विकास अधिक टिकाऊ बनता है।

> समृद्धि का वास्तविक अर्थ केवल अधिक प्राप्त करना नहीं, बल्कि सही तरीके से प्राप्त करना और उसका न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित करना भी है। यही सत्यनिष्ठा का सार और सुशासन का आधार है।

सत्यमेव समृद्धिः राष्ट्रधर्म का आधार



मयंक हर्षवर्धन जैन | MAYANK HARSHVARDEN JAIN
प्रबंधक | MANAGER

सैकड़ों-हजारों वर्षों के इतिहास की ओर दृष्टि डालें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी राष्ट्र की सच्ची भव्यता और स्थायी समृद्धि उसकी भौतिक संपदा या सैन्य शक्ति पर टिकी नहीं होती। किसी देश का वास्तविक उत्थान उसके नागरिकों के चरित्र, नैतिक मूल्यों और जीवन के प्रति दृष्टिकोन से निर्धारित होता है। आज के इस आधुनिक युग में जब संपूर्ण विश्व भौतिक प्रगति की अंधी दौड़ में शामिल है, तब एक बार फिर हमें अपनी प्राचीन जड़ों की ओर लौटने की आवश्यकता है। यह शाश्वत सत्य है कि सत्यनिष्ठा ही किसी भी राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक समृद्धि का एकमात्र मार्ग है। जब प्रशासन और जनजीवन दोनों में सतर्कता और सत्यनिष्ठा का दीप जलता है, तभी राष्ट्र प्रगति के पथ पर अजेय बनता है।

भारतीय सभ्यता का मूल मंत्र: धर्म और सत्यनिष्ठा

भारतीय सनातन चिंतन ने कभी भी भौतिक सुख और नैतिकता को एक-दूसरे से अलग नहीं माना। हमारे मनीषियों ने सदा इस बात पर बल दिया कि भौतिक विकास तभी फलदायी और कल्याणकारी हो सकता है जब उसके मूल में 'धर्म' की प्राण-प्रतिष्ठा हो। यहाँ धर्म का अर्थ किसी संप्रदाय विशेष से नहीं, बल्कि उस नैतिक कर्तव्य, सदाचार और सत्यनिष्ठा से है जो समूचे समाज को जोड़े रखता है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, हमारी संस्कृति ने सदा यह सिखाया है कि जो धन या ऐश्वर्य अनैतिकता, भ्रष्टाचार या छल-कौशल से अर्जित किया जाता है, वह क्षणिक होता है और अंततः विनाश का कारण बनता है। इसके विपरीत, नीतिपूर्वक, परिश्रम और प्रामाणिकता से अर्जित संपत्ति ही समाज में वास्तविक सुख, शांति और समृद्धि का विस्तार करती है।

ऋग्वेद का एक अत्यंत प्रसिद्ध श्लोक हमें कर्म और शुद्धि का मार्ग दिखाता है:
"भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येम अक्षभिर्यजत्राः।"
(हे देवगण! हम अपने कानों से कल्याणकारी वचनों को सुनें और नेत्रों से सदा कल्याणकारी दृश्यों को ही देखें।)

यह श्लोक केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—चाहे वह शासन हो, व्यापार हो या व्यक्तिगत आचरण—में एक उच्च नैतिक दृष्टि और आंतरिक शुद्धि की प्रेरणा देता है। जब एक व्यक्ति के विचार, वाणी और कर्म में पवित्रता होती है, तो उसके द्वारा किया गया कार्य स्वतः ही समाज के लिए कल्याणकारी बन जाता है।

सतर्कता : राष्ट्र निर्माण का प्रहरी

जब हम आज के संदर्भ में 'सतर्कता' शब्द पर विचार करते हैं, तो यह केवल कुछ विभागों या कानूनों तक सीमित नहीं रह जाता। सतर्कता का अर्थ है—अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहना, अंतरात्मा की आवाज को सुनना और हर उस प्रवृत्ति के प्रति सजग रहना जो समाज और राष्ट्र के हितों के विरुद्ध हो। प्राचीन भारतीय राज्यव्यवस्था में राजाओं के लिए 'राजधर्म' को सर्वोच्च माना गया था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजा और प्रशासकों के लिए अत्यधिक कड़े नैतिक और प्रशासनिक नियमों का उल्लेख किया गया है। कौटिल्य ने स्पष्ट रूप से कहा था कि राज्य के कोष की रक्षा करना और प्रजा के कल्याण को सर्वोपरि रखना प्रशासक का सबसे बड़ा धर्म है। यदि प्रशासक या अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग करता है, तो वह केवल कानून का उल्लंघन नहीं करता, बल्कि राष्ट्र की आत्मा के साथ विश्वासघात करता है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र का यह श्लोक प्रशासनिक प्रामाणिकता का अद्भुत उदाहरण है:
"प्रजासु सुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्। नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्।।"

(प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है, प्रजा के हित में ही उसका हित है। राजा को अपने निजी प्रिय लगने वाले विषयों में हित नहीं देखना चाहिए, बल्कि जो प्रजा को प्रिय और हितकारी हो, वही उसका वास्तविक हित है।)

यह दर्शन आज के समय में भी सतर्कता और सुशासन की मूल आत्मा है। जब एक लोक सेवक या नागरिक यह समझ जाता है कि उसकी शक्ति का उपयोग निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि सामूहिक कल्याण के लिए है, तो भ्रष्टाचार और अनैतिकता के अवसर स्वतः ही समाप्त होने लगते हैं।

अर्थ और अनर्थ का विवेक

भारतीय दर्शन में धन को 'लक्ष्मी'

कहा गया हैं। जब तक लक्ष्मी के साथ सदाचार और विवेक का बंधन रहता है, वे घर-परिवार और समाज में समृद्धि लाती हैं। किंतु जब लोभ, मोह और अनैतिकता का आवरण चढ़ जाता है, तो वही लक्ष्मी 'अलक्ष्मी' यानी दरिद्रता और अशांति का कारण बन जाती है।
उपनिषदों में स्पष्ट रूप से चेतावनी दी गई है कि दूसरों के धन या अधिकार पर बुरी नजर नहीं डालनी चाहिए। ईशोपनिषद का यह मंत्र आज की उपभोक्तावादी संस्कृति के लिए एक महान संदेश है:
"ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम।।"

(इस संसार में जो कुछ भी चर और अचर है, वह सब ईश्वर द्वारा व्याप्त है। इसलिए उसका त्यागपूर्वक उपभोग करो, किसी के धन की लालसा मत करो—क्योंकि धन अंततः किसका है?)

यह श्लोक हमें यह सिखाता है कि संतोष और प्रामाणिकता ही जीवन का सबसे बड़ा आभूषण है। जब समाज में यह भावना बलवती होती है कि अनुचित रूप से कमाया गया धन कभी सुख नहीं दे सकता, तब स्वतः ही भ्रष्टाचार की जड़ें हिल जाती हैं।

चरित्रबल और सामूहिक समृद्धि

समृद्धि केवल सकल घरेलू उत्पाद या बड़ी-बड़ी इमारतों के निर्माण से नहीं मापी जाती। वास्तविक समृद्धि तब झलकती है जब देश का अंतिम व्यक्ति सुरक्षित अनुभव करे, उसे न्याय मिले और समाज में पारदर्शी व्यवस्था हो। चरित्रबल ही वह नींव है जिस पर राष्ट्र की इमारत टिकी होती है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने दैवी और आसुरी संपदा का विस्तार से वर्णन किया है। दैवी संपदा वे गुण हैं जो मनुष्य को ऊपर उठाते हैं, जबकि आसुरी संपदा पतन का मार्ग दिखाती है। गीता का यह श्लोक मे हम देखते है की :
"दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुषमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम्।।"
(हे पार्थ! दंभ, गर्व, अभिमान, क्रोध, कठोरता और अज्ञान—ये सब आसुरी प्रवृत्तिके मनुष्य के लक्षण हैं।)

इसके विपरीत, निर्भयता, सत्यनिष्ठा, करुणा और अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा—ये दैवी गुण हैं। जब एक समाज इन दैवी गुणों को अपने दैनिक आचरण में उतारता है, तो वहाँ सतर्कता की कोई बाहरी दीवार खड़ी करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि तब हर नागरिक खुद अपना और समाज का प्रहरी बन जाता है।

सुशासन और पारदर्शिता का मार्ग

आज के समय में जब हम 'सत्यनिष्ठा से समृद्धि' की बात करते हैं, तो इसका सीधा अर्थ यह है कि बिना प्रामाणिकता और सत्यनिष्ठा के आर्थिक विकास का कोई मूल्य नहीं रह जाता। एक पारदर्शी और सतर्क व्यवस्था ही निवेशकों का विश्वास जीत सकती है, युवाओं को समान अवसर दे सकती है और देश के संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित कर सकती है।

सतर्कता आयोगों और कानूनों की अपनी भूमिका है, वे अपराधियों पर नकेल कसते हैं। किंतु कानून केवल बाहरी अनुशासन सिखा सकता है, आंतरिक शुद्धि और नैतिक मूल्य तो संस्कारों से ही आते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि हमारी शिक्षा प्रणाली, हमारे परिवार और हमारे सामाजिक ताने-बाने में सत्यनिष्ठा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

महाभारत में विदुर नीति के अंतर्गत विदुर जी कहते हैं:

"सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृमया रक्ष्यते रूपं कुलवृत्तेन रक्ष्यते।।"

(सत्य से धर्म की रक्षा होती है, अभ्यास से विद्या की रक्षा होती है, उबटन या सौंदर्य प्रसाधनों से शरीर के रूप की रक्षा होती है, और उत्तम आचरण से कुल और समाज की रक्षा होती है।)

यह श्लोक आज के समय में हमारे सामूहिक उत्तरदायित्व को रेखांकित करता है। यदि हमारा आचरण शुद्ध है, तो हमारा कुल, हमारा समाज और हमारा राष्ट्र स्वतः ही सुरक्षित और समृद्ध हो जाएगा।

निष्कर्ष: एक स्वर्णिम भविष्य की ओर

सत्यनिष्ठा और सतर्कता कोई बोझिल शब्द नहीं हैं, बल्कि यह एक सुखी, संपन्न और गौरवशाली जीवन जीने की कला हैं। जब हम अपने प्राचीन भारतीय मूल्यों में त्याग, सेवा, सत्य और प्रामाणिकता का संदेश निहित है—को अपने आधुनिक जीवन का आधार बनाते हैं, तब हम न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन को उन्नत करते हैं, बल्कि पूरे राष्ट्र को समृद्धि के शिखर पर पहुँचा देते हैं।

आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपने दैनिक जीवन में सत्यनिष्ठा को अपनाएँगे, व्यवस्था में पारदर्शिता और सतर्कता के प्रति जागरूक रहेंगे, और अपने महान राष्ट्र को एक बार फिर से विश्व गुरु और समृद्धि के सच्चे प्रकाश से आलोकित करेंगे।

क्योंकि अंततः यही सत्य है:
"यतः धर्मस्ततः जयः। यतः सत्यस्ततः समृद्धिः।"

(जहाँ धर्म है, वहीं विजय है; और जहाँ सत्यनिष्ठा है, वहीं स्थायी समृद्धि का निवास है।)

Probity for Prosperity



के शीला | K SHEELA
प्रबंधक | MANAGER

Probity for Prosperity means achieving lasting progress, success, and well-being through honesty, integrity, fairness, and ethical conduct. In simple words, we should earn prosperity through the right means, not through dishonest practices. Probity means honesty, integrity, transparency, fairness, and doing what is morally and ethically right. Prosperity means growth, wealth, happiness, good health, opportunities, and an improved quality of life.

Probity for prosperity in four areas

1. Personal life: Being truthful, keeping promises, earning money honestly, and treating others fairly lead to self-respect and lasting relationships.

2. Family: Teaching children good values, spending responsibly, and being honest with family members create trust, peace, and security.

3. Society and organizations: Preventing corruption, following rules, providing equal opportunities, and making transparent decisions promote justice, efficiency, and collective progress.

4. Nation: Honest public administration, transparent government spending, fair recruitment, corruption-free public services, and responsible citizens help national wealth reach the people who need it.

Tools for Prosperity: Education, Technology, Transparency, Honesty, and Family Values

Prosperity is not merely the accumulation of wealth; it is the overall development of individuals, families, society, and the nation. To achieve true and sustainable prosperity, we need education, technology, transparency, honesty, and strong family values. These tools work together to create a responsible, ethical, and developed society.

1. Education – The Main Weapon for Prosperity:

Education is the most powerful instrument for achieving prosperity. It removes ignorance, develops knowledge, creates employment opportunities, and improves living standards. An educated citizen can distinguish between right and wrong and contribute positively to society and national development.

2. Technology – A Tool to Reduce Corruption:

Technology plays a vital role in promoting transparency and accountability. Digital payments, online tenders, e-governance, and electronic record-keeping reduce unnecessary manual intervention and opportunities for corruption. Technology makes public services faster, more accessible, and easier to monitor.

3. Transparency and Honesty – The Foundation of Trust:

Transparency means openness in decisions, transactions, and the use of public resources. Honesty means performing our duties sincerely without cheating, bribery, or misuse of authority. When individuals, organizations, and governments follow these values, public money is protected, resources are used efficiently, and people develop trust in institutions. Such trust creates an environment for sustainable prosperity.

4. Parents and Children – The Beginning of an Ethical Society:

Parents are the first teachers of children. They must teach their children the importance of honesty, respect, discipline, compassion, and responsibility towards family, society, and the nation. Children learn more from their parents' actions than from their words. When parents practise integrity and encourage their children to help others, respect public property, obey laws, and reject corruption, they lay the foundation for a responsible future generation.

5. Family, Society, and Nation – A Shared Responsibility:

Prosperity begins with an individual, grows within a family, spreads through society, and ultimately strengthens the nation. Every citizen has a responsibility to work honestly, respect others, protect public resources, and contribute to the common good. When education develops knowledge, technology improves efficiency, transparency builds trust, and family values nurture character, prosperity becomes inclusive and sustainable.

Conclusion: Education provides knowledge, technology provides tools, transparency ensures accountability, honesty builds trust, and parents nurture good character. When all these elements work together, probity becomes a way of life and prosperity becomes a shared achievement.



सत्यनिष्ठा से समृद्धि

के. रमा | K RAMA
प्रबंधक | Manager

१. स्वयं के लिए — पहले खुद को सुधारें
सच की राह पर कदम बढ़ाएँ,
ईमानदारी को जीवन बनाएँ।
लालच छोड़ें, कर्तव्य निभाएँ,
अपने अच्छे कर्मों से मान बढ़ाएँ।

२. परिवार के लिए — संस्कारों से खुशहाली
घर में प्रेम और विश्वास रहे,
हर रिश्ते में सम्मान रहे।
बच्चों को सच्चाई सिखाएँ,
अच्छे संस्कारों से घर सजाएँ।

३. समाज के लिए — समानता और सद्भाव
न ऊँच-नीच, न भेदभाव हो,
हर इंसान का सम्मान हो।
मिल-जुलकर सब हाथ बढ़ाएँ,
सत्य और न्याय का दीप जलाएँ।

४. संगठन के लिए — ईमानदारी से कार्य करें
कर्तव्य निभाएँ पूरी निष्ठा से,
निर्णय लें निष्पक्षता से।
न रिश्वत हो, न भ्रष्टाचार,
पारदर्शिता बने कार्य का आधार।

५. राष्ट्र के लिए — नैतिकता से विकास
जनता का धन जनता पर लगे,
न्याय का सूरज हर ओर जगे।
ईमानदार शासन, जागरूक नागरिक,
इनसे बने भारत उन्नत और समृद्ध।

कविता का सार: स्वयं सुधरें, परिवार सँवारें, समाज में प्रेम और विश्वास उतारें। संगठन में निष्ठा, राष्ट्र में ईमान, इन्हीं से बढ़े देश का मान। नैतिकता हो हर कर्म का आधार, समृद्ध बने अपना देश महान। सत्य, सेवा और न्याय अपनाएँ, मिलकर विकसित भारत बनाएँ। जब व्यक्ति में ईमानदारी, परिवार में संस्कार, समाज में सद्भाव और राष्ट्र में सुशासन होता है, तभी सच्ची समृद्धि आती है। यही है "सत्यनिष्ठा से समृद्धि"।

Probity for Prosperity



महेश रामावथ | MAHESH RAMAVATH
प्रबंधक | Manager

> "The time is always right to do what is right."
> - Martin Luther King Jr.

When we hear the word prosperity, we think of success, financial growth, better opportunities and a good life. But another question is important, how do we achieve that prosperity? This is where probity comes in.

Probity means honesty, fairness, transparency and integrity in our actions. In other words, it means doing the right thing even when nobody is watching. It is not just a principle to be discussed; it is a value that should guide our everyday decisions.

I believe probity is reflected not only in decisions but also in small choices we make daily, maintaining transparency, giving everyone a fair opportunity, accepting our mistakes, avoiding undue advantage and following the right process even when a shortcut appears easier. These choices may look small, but together they shape our character and the environment around us.

"Integrity is choosing courage over comfort; choosing what is right over what is fast, easy, or popular."— Brene Brown

> *Integrity is choosing courage over comfort; choosing what is right over what is fast, easy, or popular.*
>
> — Brene Brown

In professional life, we often face pressure to complete work quickly. Sometimes a shortcut may appear convenient, while remaining silent may seem easier. However, the way we achieve a result is as important as the result itself. A successful outcome loses its value when it is achieved by compromising fairness or trust.

Probity builds trust. When people know that decisions are taken fairly, they have confidence in the process. When colleagues trust one another, teamwork becomes stronger. When customers and stakeholders believe that processes are transparent, relationships become more meaningful.

Technology has made our work faster and more transparent. Digital records, online transactions, e-auctions and automated systems have strengthened accountability. Yet technology can only provide a framework. The final safeguard is still the person using the system. A system may tell us what is permissible, but our conscience tells us what is right.

That is why probity begins with self-checking. Before taking an important decision, we can ask ourselves, If this decision becomes known to everyone tomorrow, will I still be comfortable explaining it? This question can make us pause and think before acting.

> *It takes 20 years to build a reputation and five minutes to ruin it.*
>
> — Warren Buffett

Prosperity achieved by compromising values may provide temporary gains, but it cannot create lasting respect. When growth is built on honesty and fairness, it becomes sustainable and benefits individuals, organisations and society.

Probity for Prosperity carries a powerful message, prosperity should not be viewed merely as the destination, the values followed on the journey matter equally.

Let us choose fairness over favouritism, transparency over secrecy, responsibility over convenience and integrity over shortcuts. True prosperity is not simply having more, it is achieving success that we can be proud of.

Probity builds trust. Trust builds strong institutions. Strong institutions create lasting prosperity.

Beyond Compliance: Building Prosperity Through Preventive Financial Vigilance



उज्ज्वल जैन | UJJWAL JAIN
प्रबंधक | Manager

In public sector enterprises, financial integrity is often assessed through compliance reports, audit observations and the timely fulfilment of statutory obligations. Yet, the true measure of sound financial governance lies not merely in whether irregularities are detected, but in whether systems are designed to prevent them in the first place.

For an organisation like MSTC Limited, this distinction is significant. Commercial operations require timely decisions, efficient financial workflows and responsible utilisation of resources. These objectives must coexist with transparency, accountability and adherence to established procedures. The real challenge is not to choose between efficiency and compliance, but to make them mutually reinforcing.

Financial management offers several opportunities to put this principle into practice. Accurate accounting, regular reconciliation, proper verification of supporting documents and timely statutory filings create a reliable foundation for decision-making. Similarly, clearly defined responsibilities and appropriate internal controls reduce dependence on individual discretion and help identify discrepancies before they develop into larger problems.

An effective control system, however, should not become an obstacle to legitimate business. Unnecessary delays, repetitive procedures and unresolved discrepancies can affect operational efficiency and stakeholder confidence. Processes must therefore be periodically reviewed to eliminate avoidable bottlenecks without weakening essential safeguards. Digital reporting, standardised workflows and systematic monitoring can support this balance by improving traceability, consistency and the timely availability of financial information.

Various payments illustrate this relationship particularly well. Prompt disbursement, supported by proper verification and authorisation, strengthens business relationships while protecting the organisation against errors and unauthorised payments. Similarly, meaningful audit compliance should extend beyond responding to observations; it should identify underlying weaknesses, establish corrective measures and prevent recurrence.

Accountability is the connecting principle across these activities. Every financial decision should have a clear basis, appropriate approval and an auditable record. Employees must also feel responsible for questioning unexplained deviations rather than treating them as routine exceptions. Such a culture makes vigilance a shared professional responsibility instead of an activity confined to a particular department.

The theme “Probity for Prosperity” reminds us that ethical conduct and economic performance are not competing priorities. Preventive controls protect resources, transparent processes build confidence, and disciplined execution improves the quality of organisational decisions. Together, these practices create lasting institutional value.

Ultimately, prosperity is strengthened not by controls that merely identify mistakes after they occur, but by people and processes that make errors, irregularities and avoidable delays less likely. For MSTC Limited, this is the practical promise of preventive vigilance: conducting business efficiently while ensuring that integrity remains non-negotiable.

Honesty,
Ethical Conduct,
and Transparency
in Every Action

सत्यमेव समृद्धि



राघवेंद्र सिंह | RAGHVENDRA SINGH
सहायक प्रबंधक | Assistant Manager

सत्यनिष्ठा वह अदृश्य पूँजी है, जिसका मूल्य धन से नहीं, विश्वास से आँका जाता है। यह मनुष्य को प्रलोभन के क्षणों में भी सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। आधुनिक हिंदी साहित्य में नैतिकता, मानवता और लोकमंगल की इसी चेतना को विशेष महत्त्व दिया गया है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी प्रसिद्ध कविता "स्वर्गीय-संगीत" में कहते हैं—

"जहाँ स्वार्थ का सर्वथा त्याग है,
सभी के लिए एक-सा भाग्य है।"

इन पंक्तियों में दर्शाया गया कि व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग और सबके प्रति न्यायपूर्ण दृष्टिकोण ही सामूहिक समृद्धि का आधार है। जब व्यक्ति निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के हित में कार्य करता है, तभी उसके कर्म वास्तविक समृद्धि का आधार बनते हैं।

प्रेमचंद की ही कहानी 'नमक का दरोगा' सत्यनिष्ठा का एक और सजीव उदाहरण है। वंशीधर रिश्वत के आकर्षण से अप्रभावित रहकर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। उन्हें तत्काल पद और सुविधा का लाभ नहीं मिलता, बल्कि कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। फिर भी उनका निष्ठावान आचरण अंततः सम्मान अर्जित करता है। यह प्रसंग बताता है कि ईमानदारी का मूल्य केवल तत्काल सफलता या आर्थिक पुरस्कार से नहीं मापा जा सकता। जो व्यक्ति सिद्धांतों के लिए क्षणिक लाभ त्यागता है, वही समाज में भरोसे की दीर्घकालीन नींव रखता है। सार्वजनिक जीवन में ऐसी नैतिक दृढ़ता संस्थागत शुचिता, जनविश्वास और स्थायी समृद्धि की वास्तविक प्रेरक शक्ति बनती है।

किसी संगठन की सफलता केवल उसकी योजनाओं से नहीं, बल्कि उन्हें कार्यान्वित करने वाले व्यक्तियों की निष्ठा से निर्धारित होती है। उदाहरणार्थ, यदि किसी सार्वजनिक खरीद प्रक्रिया में निष्पक्षता और पारदर्शिता अपनाई जाए, तो संसाधनों का उचित उपयोग होता है और योग्य संस्थाओं को समान अवसर मिलता है। इसके विपरीत, पक्षपात और भ्रष्टाचार विकास के मार्ग में अदृश्य अवरोध खड़े कर देते हैं।

आज डिजिटल भारत के युग में सत्यनिष्ठा का महत्त्व और बढ़ गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन सेवाएँ विकास के नए द्वार खोल रही हैं। किंतु तकनीकी प्रगति तभी सार्थक होगी, जब उसके संचालन में ईमानदारी, डेटा की सुरक्षा और जवाबदेही सुनिश्चित हो। तकनीक विकास को गति दे सकती है, पर सत्यनिष्ठा ही उसे सही दिशा देती है।

सत्यनिष्ठा का आरंभ बड़े निर्णयों से नहीं, छोटे आचरणों से होता है। एक विद्यार्थी का नकल न करना, एक व्यापारी का सही माप देना और एक कर्मचारी का बिना पक्षपात अपना दायित्व निभाना—ये साधारण प्रतीत होने वाले कार्य ही नैतिक राष्ट्रनिर्माण की आधारशिलाएँ हैं।

अतः समृद्धि का वास्त

विक मार्ग सत्यनिष्ठ कर्म, नैतिक साहस और सामूहिक उत्तरदायित्व से होकर गुजरता है। सत्यनिष्ठा से विश्वास जन्म लेता है, विश्वास से सहयोग और सहयोग से समृद्धि। जिस दिन ईमानदारी केवल आदर्श नहीं, बल्कि हमारी कार्यसंस्कृति बन जाएगी, उस दिन समृद्ध भारत का स्वप्न साकार होने की दिशा में निर्णायक कदम बढ़ेगा।

सत्यनिष्ठा जीवन का संस्कार बने, तभी समृद्धि राष्ट्र का स्थायी आधार बनेगी।

सत्यनिष्ठा से समृद्धि: डिजिटल कॉर्पोरेट गवर्नेंस में प्रणालियों की सुदृढ़ता



अर्पित माहेश्वरी | ARPIT MAHESHWARI
सहायक प्रबंधक | Assistant Manager

केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा इस वर्ष घोषित विषय "सत्यनिष्ठा से समृद्धि" सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को अपने प्रशासनिक ढांचे और तकनीकी व्यवस्था का एक ईमानदार विश्लेषण करने का मौका देता है। आज के समय में किसी भी संस्थान की असली प्रगति केवल उसकी बाहरी वेबसाइट, या औपचारिक प्रमाणनों से तय नहीं हो सकती। असल सत्यनिष्ठा तब आती है जब संगठन के बाहरी दावों के साथ-साथ उसकी आंतरिक नीतियां और आंतरिक परिचालन प्रणाली भी पूरी तरह से पारदर्शी, स्वचालित और नियम-बद्ध हों।

परिचालन शुचिता और व्यावहारिक सतर्कता

निवारक सतर्कता का मुख्य उद्देश्य मानवीय दखल और व्यक्तिगत पसंद-नापसंद को कम करके व्यवस्था को मजबूत बनाना है। जब हम डिजिटल लेन-देन के युग में काम कर रहे हैं, तब वित्तीय प्रणालियों या डेटा प्रबंधन में पूरी तरह स्वचालित गेटवे के बजाय मैन्युअल तरीकों या आंतरिक एंट्री पर निर्भर रहना सुरक्षा को कमजोर करता है और एक असुरक्षित डिजिटल फुटप्रिंट भी छोड़ता है। । बिना स्पष्ट और लिखित मानक संचालन प्रक्रियाओं के काम चलाने से डेटा सुरक्षा पर असर पड़ता है। इसके साथ ही, दफ्तरों में कागजों की फिजूलखर्ची रोकना, बिजली और ऊर्जा का सही संरक्षण करना, और डिजिटल रूप से उपलब्ध कागजातों को केवल 'प्रामाणिकता' का ठप्पा लगाने के लिए हार्ड कॉपी में प्रिंट करना तकनीकी और प्राकृतिक दोनों संसाधनों की बर्बादी है।

नीतियों की स्पष्टता और लिखित जवाबदेही

प्रशासनिक शुचिता की पहली शर्त यह है कि काम करने के तौर-तरीकों में कोई भी अनिश्चितता या अस्पष्टता न हो। जब संगठन के निर्देश लिखित नियमों के बजाय मौखिक आदेशों से तय होने लगते हैं, तो विनियामक जवाबदेही अपने आप कमजोर हो जाती है। यह असमंजस तब और बढ़ जाता है जब विभिन्न स्तरों पर जरूरी दस्तावेजों की समीक्षा के लिए एक समान नियम होने के बजाय अलग-अलग व्यक्तिगत व्याख्याओं को मान लिया जाता है। इसी तरह, केवल सूचना प्राप्त करने और किसी विनियामक या वित्तीय दस्तावेज को अधिकृत करने जैसे डिजिटल हस्ताक्षर का उपयोग के बीच एक बड़ा व्यावहारिक अंतर है। यदि किसी परिचालन कार्य की निरंतरता अनिवार्य है, तो अनौपचारिक व्यवस्थाओं के स्थान पर संस्थान में उपस्थित अधिकारियों को कार्यभार का लिखित व औपचारिक प्रत्यायोजन किया जाना चाहिए, जैसा कि अन्य स्थापित उद्योगों में एक मानक प्रक्रिया है।

मानव संसाधन प्रबंधन और कार्यालय अवसंरचना

संगठन की वास्तविक प्रगति उसके कर्मचारियों के हुनर के सही उपयोग और पारदर्शी नीतियों पर टिकी होती है। तकनीकी और विशिष्ट योग्यता प्राप्त पेशेवरों के कौशल को उनकी मूल विधा और क्षमता के अनुरूप उच्च-स्तरीय भूमिकाओं में नियोजित करना बौद्धिक संपदा के इष्टतम उपयोग के लिए आवश्यक है। इसके साथ ही, कार्यबल की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यभार का संतुलन सुनिश्चित करना और कार्यालय परिवेश में आधुनिक एर्गोनोमिक व्यवस्थाओं व बुनियादी भौतिक अवसंरचना तथा स्वच्छ नागरिक सुविधाओं को निरंतर अपग्रेड करना कर्मचारियों की कार्य-कुशलता को बढ़ाता है। प्रशासनिक सत्यनिष्ठा और निवारक सतर्कता का मूल सिद्धांत प्रक्रियाओं को सरल बनाना है। करियर विकास से जुड़ी अनापत्ति नीतियों को पारदर्शी रखने के बजाय नियमों में अनावश्यक विनियामक जटिलताएं या अनुचित प्रशासनिक अवरोध उत्पन्न करना सीधे तौर पर प्रणालीगत विसंगति को जन्म देता है। अतः यह विनियामक सुरक्षा के अनुकूल है कि नीतियों में लचीलापन हो, ताकि बिना किसी एकतरफा अवरोध के संस्थान के प्रति कार्यबल का स्वाभाविक विश्वास और कार्यक्षमता सुदृढ़ बनी रहे।

निष्कर्ष

आज का युग डिजिटल फुटप्रिंट का युग है, हमारा हर कार्य कहीं न कहीं डिजिटल फुटप्रिंट छोड़ता है। "सत्यनिष्ठा से समृद्धि" का मार्ग यह मांग करता है कि संगठन अपने बाहरी विज्ञापनों और आंतरिक परिचालन यथार्थ के बीच के फासले को पूरी तरह समाप्त करे। वास्तविक संस्थागत प्रगति किसी औपचारिक घोषणा से नहीं, बल्कि तब सुनिश्चित होगी जब मौखिक निर्देशों का स्थान स्पष्ट लिखित नियम लेंगे, संवेदनशील डेटा सुरक्षा के नियमों का कड़ाई से पालन होगा, और बुनियादी अवसंरचना में सुधार करके कार्यबल को एक भयमुक्त व पारदर्शी परिवेश दिया जाएगा। जब आंतरिक प्रणालियां न्यायसंगत और पूरी तरह सुरक्षित होंगी, तभी संस्थान नैतिक प्रगति और वास्तविक आर्थिक समृद्धि का एक अनुकरणीय प्रतीक बन सकेगा।

सत्यमेव समृद्धि



शिव कुमार मालवीय | SHIV KUMAR MALVIYA
सहायक प्रबंधक | Assistant Manager

सत्यनिष्ठा से तात्पर्य है कि "अपने विचारों में सत्यवादी रहना" व्यक्ति अपने मानक के अनुसार अपेक्षित कार्य करता है तथा व्यक्ति जैसी अपेक्षा दूसरों से करता है वह खुद भी ऐसा ही करें, व्यक्ति जिस आधार पर दूसरों को सत्य या असत्य कहता है वह उस पर भी लागू होता है। व्यक्ति के विचार व्यवहार में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। सत्यनिष्ठा वाला व्यक्ति अपना जीवन सिद्धांतानुसार चलाता है। सत्यनिष्ठा वाला व्यक्ति विश्वासी होता है क्योंकि उसके सभी निर्णय नैतिकता पर आधारित होते है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने शब्दों पर कायम रहता है और अपने वादों को सदा निभाते है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने चरित्र में दोहरापन नहीं रखता। सत्यनिष्ठा के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाता है और न ही इसका प्रयोग विभेदभाव पूर्वक किया जाता है। सत्यनिष्ठा का तात्पर्य यह भी है कि सत्यनिष्ठ व्यक्ति जीत और हार में एक समान रहता है।

सत्यनिष्ठा वह मूल्य है जिसे हम बाहर से नियंत्रित नहीं कर सकते है। सत्यनिष्ठा का स्त्रोत नैतिक तर्क है न कि लाभ-हानि से युक्त तर्क। जब हमें कोई निर्णय लेना होता है या जब कभी भी हम मानसिक रूप से कमजोर पड़ रहें होते है तो हमें नैतिकता का सहारा लेना होता है। सत्यनिष्ठा से आवश्यक रूप से दक्षता आती है। साधारणतया, सत्यनिष्ठा की कमी भ्रष्टाचार का मार्ग खोल देती है। भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति की लालसा, न्यूनतम प्रयास से अधिक लाभ की चाह के कारण लोग सत्यनिष्ठा के साथ समझौता कर रहें है।

सत्यनिष्ठा और समृद्धि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इतिहास गवाह है कि बिना नैतिक मूल्यों के अर्जित की गई समृद्धि कभी भी स्थायी नहीं हो सकती। यदि विकास की नींव में भ्रष्टाचार, बेईमानी और स्वार्थ छिपा हो, तो वह समृद्धि का महल ताश के पत्तों की तरह ढह जाता है। इसके विपरीत, जहां पारदर्शिता और ईमानदारी होती है, वहां विकास की जड़ें मजबूत होती हैं। किसी भी राष्ट्र की समृद्धि की पहचान उस राष्ट्र के नागरिकों से होती है और अच्छे नागरिक की पहचान उसकी सत्यनिष्ठता से होती है अर्थात यह कहा जाए कि सत्यनिष्ठ नागरिकों का देश के विकास में बहुत योगदान होता है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जब एक समाज में सत्यनिष्ठा की संस्कृति होती है लोगों के बीच विश्वास बढ़ता है, पारदर्शिता आती है और भ्रष्टाचार कम होता है। एक पारदर्शी और सत्यनिष्ठ शासन प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। भ्रष्टाचार की कमी से देश का राजस्व सही जगह (जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे पर) खर्च होता है, जो अंततः समाज को समृद्ध बनाता है।

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि में सबसे जरूरी है उस राष्ट्र का भ्रष्टाचार मुक्त होना। इसके लिए राष्ट्र के नागरिकों में सत्यनिष्ठता का भाव होना आवश्यक है। सत्यनिष्ठता सिद्धांत सही और गलत को परिभाषित करने के लिये एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। भ्रष्टाचार के संदर्भ में सत्यनिष्ठता स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करती है, जो स्वीकार्य व्यवहार को अनैतिक या भ्रष्ट आचरण से अलग करती है। संसार के सभी महान पथप्रदर्शकों ने सत्यनिष्ठा के बल पर ही अपनी पहचान बनाई और समाज को समृद्ध किया। महात्मा गांधी, अब्राहम लिंकन और डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जैसे महापुरुषों का जीवन इस बात का जीवंत उदाहरण है कि सत्य और ईमानदारी के मार्ग पर चलकर कैसे बड़े-बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं। इन महापुरुषों ने सिखाया कि व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने नैतिक मूल्यों से समझौता न करना ही सच्ची शक्ति है।

हिन्दी के महान् आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत निबन्ध को पढ़कर हमें आत्मनिर्भर बनने की सीख मिलती है। वस्तुतः जीवन एक संघर्ष है और इस संघर्ष में मनुष्य को समाज का अपेक्षित सहयोग भी मिलता है। यह सहयोग यदि आवश्यकता से अधिक मिलने लगे, तो वह दूसरों पर निर्भर रहने का आदी हो जाता है। दूसरों पर उसकी निर्भरता उसकी परतन्त्रता का कारण भी बन जाती है। दूसरे पर निर्भर रहकर व्यक्ति अपने जीवन के सुखों का वास्तविक उपभोग नहीं कर सकता, इसलिए कहा गया है- "पराधीन सपने हुँ सुख नाहीं।" वास्तव में, स्वावलम्बन या आत्मनिर्भरता ही मनुष्य को स्वाधीन बनने की प्रेरणा देती है। आत्मनिर्भरता की स्थिति में व्यक्ति अपनी इच्छाओं को अपनी सुविधानुसार पूरा कर पाता है। इसके लिए व्यक्ति को दूसरों के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब दूसरे के सहयोग कि आवश्यकता नहीं रहेगी अर्थात व्यक्ति आत्मनिर्भर रहेगा तो भ्रष्टाचार में अपने आप कमी

आएगी। आज देश के विकास एवं सुरक्षा हेतु भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाली परिस्थितियों को दूर करने की आवश्यकता है। निवारक सतर्कता दंडात्मक सतर्कता से बेहतर होती है। देश में कई कानूनी सुधार हुए हैं और सतर्कता प्रणाली को मजबूत करने के लिए नए कानून पेश किए गए। काले धन, बेनामी संपत्तियों, भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम जैसे कानूनों को सतर्कता प्रणाली से मजबूत करने के लिए बनाया गया। भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों में शामिल है जहां फेस-लेस कर-मूल्यांकन प्रणाली लागू की गई है। भारत उन चंद देशों में शामिल है, जहां भ्रष्टाचार को रोकने के लिए तकनीक का अधिक से अधिक इस्तेमाल किया जा रहा है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह प्रतिवर्ष अलग-अलग थीम पर आयोजित किया जाता है लेकिन भ्रष्टाचार के खिलाफ यह अभियान केवल एक दिन या केवल एक सप्ताह का मामला नहीं है। पीढ़ीगत भ्रष्टाचार बढ़ी चुनौती है जो पिछले दशकों में धीरे-धीरे बढ़ रही है और देश में विकराल रूप धारण कर लिया है। भ्रष्टाचार और पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाला भ्रष्टाचार का वंशवाद, देश को खोखला करता है जो देश के विकास में, एक समृद्ध भारत बनाने में बढ़ी बाधा है।

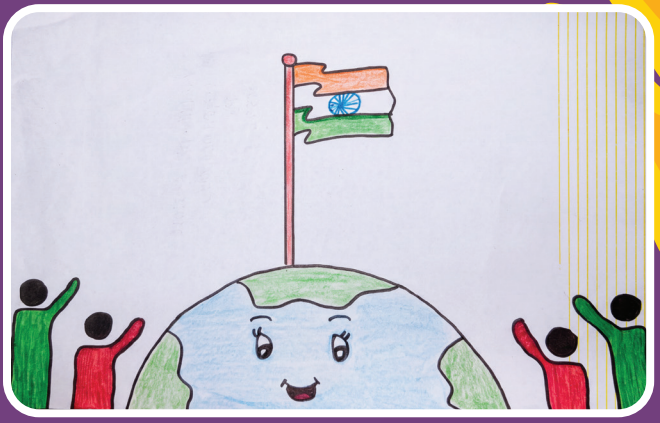
निष्कर्ष:

यहाँ हम कह सकते है कि राष्ट्र की समृद्धि का सीधा संबंध भ्रष्टाचार से है अर्थात जिस राष्ट्र में जितना अधिक भ्रष्टाचार होगा उस देश का विकास होने की संभावना न के बराबर होती है। दुनिया में जीतने भी विकसित देश है उनका भ्रष्टाचार प्रतिशत बहुत कम है। इसकी रोकथाम हेतु राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को सत्यनिष्ठा की संस्कृति अपनाना होगी।

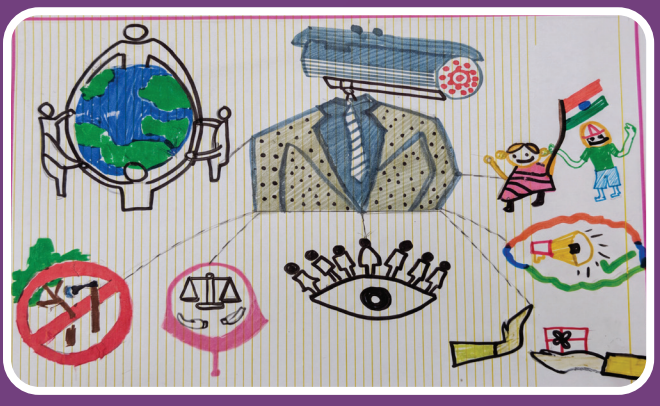
Creative Arts by Kids











Probity to Prosperity



सुनीत सिंगला | SUNIT SINGLA
प्रबंधन प्रशिक्षार्थी | Management Trainee

Vigilance is the ability to distinguish between ethical and unethical conduct. However, merely performing an ethical act does not necessarily mean that it is always right. This is where the role of probity becomes important.

Probity requires us to analyse situations with both intelligence and integrity. It enables us to examine our actions through the prism of ethical principles and question the motives and consequences behind them. Thus, probity involves a deeper and more conscious analysis of our thoughts, choices and actions.

Probity also helps us maintain the same ethical discipline behind closed doors as we do in public. It is the consistency of our conscience and conduct over a period of time. Such consistency ultimately proves the strength of our integrity, particularly when we are confronted with wrongdoing or moral dilemmas.

Although maintaining such discipline can sometimes be painstaking and demanding, But it contributes to character building and creates the foundation for long-term prosperity. When our actions remain aligned with our values, we experience greater inner peace and reduce the stress and the guilt associated with wrongdoing.

Performing each and every task in an organisation with vigilance may initially consume more time, but over a period of time, it helps in establishing a good precedent of ethical and responsible conduct. It promotes appropriate work practices, discourages the misuse of loopholes, strengthens accountability, and contributes to sustainable prosperity.

In today's scenario, where moonlighting has become prevalent, probity helps individuals align their professional conduct with the interests, rules, and regulations of the organisation. It enables them to organise their thoughts, recognise potential conflicts of interest, and remain committed to their professional responsibilities. Thus, probity not only ensures compliance with organisational norms but also strengthens trust, integrity, and long-term institutional credibility.

Thus,Vigilance enables us to identify the ethical path, while probity gives us the strength to consistently walk on it. Over time, this integrity becomes the foundation of both personal character and sustainable prosperity.

CUSTOMER GRIVENCE PROGRAM 2025







Why Should I Care About Probity?



राहुल गुप्ता | RAHUL GUPTA
प्रबंधन प्रशिक्षार्थी | Management Trainee

Two organisations have the same resources. One grows steadily while the other struggles. The difference usually lies not in money but in probity. The word may sound heavy, as if it belongs only to top management, but in reality we all practise it, or ignore it, every day, whatever our designation. It matters most in government organisations, where public money is involved.

Probity simply means integrity, honesty, transparency and fairness in decisions. We may feel we are all morally right, so we surely follow it. But it is a little more complex than that. Probity is not only about avoiding wrong actions. It is also about doing our duty fully, even when the easier path looks safer.

Suppose the organisation is entitled to a tax benefit but the rules are slightly unclear. A natural thought is, "I won't claim it. Nobody is likely to question me for not claiming, whereas a wrong claim may attract a penalty." The intent is good: to protect the organisation. But a rightful benefit left unclaimed is a real loss, and it reduces profit directly. The better approach is neither to claim it casually nor to avoid it, but to study the law, seek advice where needed, document the decision and then act.

Or consider our comfort with the way we have always worked. Better processes and technology may be available, but learning them takes effort, so we postpone. Yet public resources deserve our best effort. Modern systems reduce errors, leave a clear record of every step and make decisions easier to explain, which is what probity asks of us.

Or take delegation. Many of us prefer to do everything ourselves, believing it keeps the work safe. But work that passes through only one person has no second check. Delegating with clear responsibility and proper review brings in that check, develops our colleagues and frees our time to improve the process.

In each case, the action looked correct and even careful. Yet the organisation paid a quiet price, and such small losses add up. Probity asks us to look beyond personal comfort and ask, "What serves the organisation and the public interest best?" Doing our duty diligently, with honesty and transparency, is as much a part of probity as refusing a bribe. Small acts of probity, repeated daily, are how prosperity is built. SOPs and systems can help, but in the end it is each person's responsibility to apply probity in its true spirit.

Go back to the two organisations. What set them apart was a series of daily choices: to resolve ambiguity instead of avoiding it, to learn when it was uncomfortable, and to delegate with accountability. Prosperity built without probity is fragile; probity makes it lasting.

Skit Play 2025





The Roots Beneath Prosperity



साक्षी बसंत राम | SAKSHI BASANT RAM
प्रबंधन प्रशिक्षार्थी | Management Trainee

An organisation may show impressive growth on paper, but what sustains that growth when no one is watching? Its true strength lies not merely in its rules and systems, but in the values its people uphold and the choices they make every day.

Probity begins where external supervision ends. Rules guide conduct and vigilance ensures accountability, but neither can govern every decision a person makes. Ultimately, there comes a moment when one must choose between what is right and what is convenient. That choice reveals whether honesty is merely an obligation or a value embraced from within.

We often take shortcuts because they promise quicker results. A student may rely solely on examination-oriented notes to pass an exam, while another begins preparing early, patiently building a strong foundation. The first may achieve the immediate goal, but the second gains knowledge that endures beyond the examination. The same principle applies to professional life: reaching the destination matters, but the path chosen determines the strength of what we build.

The consequences of abandoning that path extend beyond financial loss. When dishonesty is rewarded, trust erodes. Worse, those who act honestly may begin to question whether their principles are worth upholding. Gradually, what was once an exception risks becoming the norm. An unfair advantage gained by one person can weaken the faith of many in the value of doing what is right. The greatest loss may not be what is taken, but the trust that becomes difficult to restore.

An organisation, after all, is shaped by the everyday choices of its people. When employees remain truthful even without supervision, trust becomes part of the workplace culture. Vigilance remains essential, but an organisation cannot rely on monitoring alone; it also needs people who hold themselves accountable. The time and effort spent building such a culture can instead be directed towards innovation, improvement and lasting growth.

A truly prosperous organisation is one where people are true to their work. Prosperity is not simply a rise in numbers or achievements; it is growth sustained by fairness, trust and collective responsibility. Like a tree, an organisation may be admired for its fruits, but its future depends on the strength of roots that remain unseen. Probity is one such root.

Yet this value cannot be sustained through instructions alone. It must be cultivated within each individual, beginning with the courage to be honest with oneself. We may deceive others, but we cannot entirely escape our own conscience.

Ultimately, the measure of probity is not whether someone is watching, but whether we choose what is right when no one is. For prosperity built without integrity may rise quickly, but only what is rooted in it can truly endure.

PRIZE WINNING SLOGANS OF MSTC EMPLOYEES' 2025

3RD

"सतर्कता है जन जन की ताकत,
जिम्मेदारी है सबकी साझा हिम्मत।"

जागृति संजयकुमार शाह, ईए, जीआरओ
JAGRUTI SANJAYKUMAR SHAH, EA, GRO

Probity for Prosperity



एवीएसआर मूर्ति | AVSR MURTY
कार्यकारी सहेयक | Executive Assistant

Probity implies strong morals, honesty and integrity, and is an essential foundation for good governance and sustainable development. The absence of ethical conduct in public and private spheres fosters corruption and mistrust, leading to lop-sided growth. Thus, probity is an essential virtue for national progress.

Probity fosters public trust essential for policy implementation. Probity supports public interest, ensuring equitable services. The eradication of the Licence-Permit Raj in India enhanced efficiency.

Probity in financial management reduces waste. The UN highlights global illicit outflows costing billions due to lack of probity. A system rooted in probity encourages fair competition and innovation. Corruption-induced favouritism stifles genuine innovation and enterprise.

Probity ensures a transparent environment appealing to investors. Countries like Singapore attract global investments due to their strong probity standards. Probity eliminates barriers like corruption, boosting growth. Corruption in India has historically deterred potential economic growth.

Probity diminishes uncertainty for businesses, aiding development. High transaction costs due to corruption hinder business efficiency. With probity, there's an emphasis on meritocracy, driving a knowledge-based economy. Nepotism in corrupt systems undermines the potential of a dynamic knowledge economy.

Robust mechanisms for accountability, transparency and strengthening ethics are essential to improve probity.

INTEGRITY PLEDGE

MSTC Corporate Office & NRO









MSTC Registered Office & ERO



सत्यनिष्ठा से समृद्धि

कर्रा जेठानंद रिझुमल | **KARRA JETHANAND RIJHUMAL**
कार्यकारी सहायक | EXECUTIVE ASSISTANT

ईमानदारी की ठंडी छाँव,
लाती है सुख-शांति का गाँव।

जहाँ विचार हों निर्मल और उजले,
वहाँ सपने भी सच बन सजले।

धर्म,नीति और परिश्रम का संगम,
भर देता है हर दिल में उमंग।

झूठ,कपट और लालच को हराओ,
सत्य के फूल से जीवन सजाओ।

जब हर नागरिक सच्चाई अपनाएगा,
राष्ट्र का हर कोना मुस्काएगा।

सत्यनिष्ठा है अमूल्य निधि,
जो देती है प्रगति और सिद्धि।

जहाँ सत्य का सम्मान होता है,
वहाँ समृद्धि का आवास होता है।



सत्यनिष्ठा से समृद्धि

जागृति संजयकुमार शाह | JAGRUTI SANJAYKUMAR SHAH
कार्यकारी सहायक | EXECUTIVE ASSISTANT

सत्य हमारा पथ बने,
निष्ठा हमारी ढाल,
समृद्ध भारत का सपना लेकर,
बढ़ते जाएँ हर हाल|

सत्यनिष्ठा केवल शब्द नहीं,
यह जीवन का सम्मान है,
सच्चे कर्मों से बढ़ता भारत,
यही समृद्धि की पहचान है|

सत्यनिष्ठा होगी आधार,
समृद्धि होगी उसका उपहार,
सच की राह पर कदम बढ़ाएँ,
आओ सुंदर देश बनाएँ|

सच्चाई हमारी शक्ति बने,
निष्ठा हमारी शान बने,
सत्यनिष्ठा से समृद्धि आए,
यही हमारा महान अभियान बने|

जहाँ सत्य हो, श्रम हो, निष्ठा हो,
वहीं प्रगति मुस्काएगी,
सत्यनिष्ठा की राह पकड़कर,
समृद्धि घर-घर आएगी।

आओ मिलकर प्रण यह लें—
सच से कभी न मुँह मोड़ेंगे,
मेहनत और ईमान के बल पर,
भारत को समृद्ध बनाएँगे।

सत्यनिष्ठा से समृद्धि:



मधुमिता रॉय | MADHUMITA ROY
कार्यकारी सहायक | Executive Assistant

सत्यनिष्ठा मनुष्य के जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और महान गुण है। सत्यनिष्ठा का अर्थ है—सत्य के प्रति निष्ठावान रहना, ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करना और किसी भी परिस्थिति में झूठ, छल तथा बेईमानी का सहारा न लेना। मनुष्य के चरित्र का वास्तविक मूल्य उसके धन, पद या प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि उसकी सत्यनिष्ठा से निर्धारित होता है। इसलिए कहा जाता है कि "सत्यनिष्ठा से समृद्धि" प्राप्त होती है।

सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना कर सकता है, लेकिन वह गलत रास्ते को नहीं अपनाता। कई बार झूठ बोलकर या अनुचित साधनों का प्रयोग करके जल्दी सफलता प्राप्त की जा सकती है, परंतु ऐसी सफलता स्थायी नहीं होती। इसके विपरीत, सत्य और ईमानदारी के मार्ग पर चलने से सफलता मिलने में समय लग सकता है, लेकिन वह सफलता स्थायी और सम्मानजनक होती है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति को समाज में विश्वास और सम्मान प्राप्त होता है।

विद्यार्थी जीवन में सत्यनिष्ठा का विशेष महत्व है। विद्यार्थियों को परीक्षा में नकल नहीं करनी चाहिए, अपने शिक्षकों और माता-पिता का सम्मान करना चाहिए तथा अपने कार्य स्वयं करने चाहिए। यदि कोई विद्यार्थी ईमानदारी से पढ़ाई करता है, तो उसे केवल अच्छे अंक ही नहीं मिलते, बल्कि उसमें आत्मविश्वास और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होती है। यही गुण आगे चलकर उसे एक सफल और अच्छा नागरिक बनाते हैं।
सत्यनिष्ठा केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है। इसका प्रभाव पूरे समाज और राष्ट्र पर पड़ता है। यदि सरकारी कर्मचारी ईमानदारी से अपना कार्य करें, व्यापारी ग्राहकों के साथ उचित व्यवहार करें, नेता जनता के प्रति अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाएँ और नागरिक अपने नियमों का पालन करें, तो समाज में भ्रष्टाचार और अपराध कम होंगे। इससे देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति तेज होगी।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सत्य और ईमानदारी के महान उदाहरण थे। उन्होंने अपने जीवन में सत्य को सर्वोच्च स्थान दिया। उनका विश्वास था कि सत्य और अहिंसा के माध्यम से बड़े से बड़ा परिवर्तन किया जा सकता है। उनका जीवन आज भी हमें सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

आज के आधुनिक युग में भौतिक सुख-सुविधाओं की चाह बढ़ती जा रही है। इस कारण कुछ लोग धन और सफलता पाने के लिए गलत साधनों का प्रयोग करने लगते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि धन से अधिक महत्वपूर्ण हमारा चरित्र और विश्वास है। बेईमानी से प्राप्त धन कुछ समय के लिए सुख दे सकता है, लेकिन वह मन की शांति और सम्मान नहीं दे सकता।

अतः हमें बचपन से ही सत्य, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा को अपने जीवन का आधार बनाना चाहिए। सच्ची समृद्धि केवल धन-संपत्ति में नहीं, बल्कि अच्छे चरित्र, आत्मसम्मान, विश्वास और मानसिक शांति में होती है। यदि व्यक्ति सत्यनिष्ठ होगा, तो परिवार मजबूत होगा; परिवार मजबूत होगा, तो समाज प्रगतिशील होगा और समाज प्रगतिशील होगा, तो राष्ट्र समृद्ध बनेगा। इसलिए निःसंदेह कहा जा सकता है कि सत्यनिष्ठा ही स्थायी समृद्धि की सबसे मजबूत नींव है।

अतः हमें अपने जीवन में हमेशा सत्य और ईमानदारी को अपनाना चाहिए।





सत्यनिष्ठा से समृद्धि

मनीषा सी. किनी | MANISHA C. KINI
कार्यकारी सहेयक | Executive Assistant

सत्य की राह कठिन सही,
पर मंज़िल मिलती है यहीं।
ईमानदारी जिसका आधार,
उसका जीवन बने शानदार।

न छल से सुख, न झूठ से मान,
सत्य से ही बढ़ता सम्मान।
जहाँ निष्ठा और सच्चाई का वास,
वहीं समृद्धि करती निवास।

सत्य की नींव पर भविष्य सँवरता है,
ईमानदारी से विश्वास निखरता है।
मेहनत में सच्चाई, कर्म में निष्ठा हो,
हर कदम पर नैतिकता की प्रतिष्ठा हो।

न धन बड़ा, न पद की शान,
सच्चा चरित्र ही है इंसान की पहचान।
जहाँ सत्य और विश्वास का संगम होता है,
वहीं समृद्धि का नया सवेरा होता है।

सत्य की राह पर जो चलता है,
ईमानदारी से हर कर्म करता है।
धन से बढ़कर चरित्र कमाता है,
वह जीवन में सच्ची समृद्धि पाता है।

सत्यनिष्ठा अपनाएँ, विश्वास बढ़ाएँ,
ईमानदारी से समृद्ध समाज बनाएँ।

Probity for Prosperity



दिब्येंदु सरकार | DIBYENDU SARKAR
वरिष्ठ सहायक | Senior Assistant

Where honest hands and open hearts unite,
The seeds of trust grow strong in morning light.
Walk the straight path, though the climb be slow,
For where integrity leads, prosperity will grow.

Every year, Vigilance Awareness Week invites us to pause and ask a simple question: are we building our institution on the right foundation? Observed across the country around the birth anniversary of Sardar Vallabhbhai Patel, the week reminds us that integrity is not a ceremonial value but the bedrock of progress.

Probity: The Root of Prosperity

Probity means honesty, uprightness and strong moral principle in every dealing. Prosperity is usually measured in growth, revenue and reach, but these are outcomes. Their origin is trust: the customer who believes our promises, the employee who believes in fair treatment, and the citizen who believes the system works for everyone. Trust takes years to build and moments to lose.

The Hidden Cost of Dishonesty

Corruption is often seen as a moral failing alone, but it is also an economic one. It acts as a tax on the honest and a subsidy for the undeserving. It inflates costs, delays decisions, rewards influence over merit and drains public confidence. Where integrity is the norm, fewer resources go into checking, correcting and recovering, and more go into creating. In this sense, probity is not a constraint on efficiency. It is the source of it.

Vigilance Is Everyone's Duty

Vigilance is sometimes mistaken for the work of a single department. In truth, it is a shared responsibility. Every file cleared on merit, every record kept accurately, every refusal of an undue favour and every concern raised in good faith strengthens the institution. Vigilance is not suspicion of colleagues. It is care for the organisation and the people it serves.

Leadership by Example

People follow what leaders do, not what they say. When those at the helm act fairly, accept accountability and treat mistakes with candour, integrity becomes a lived culture rather than a slogan. Leaders must also ensure that those who report wrongdoing are protected, and that honest conduct is recognised as visibly as high performance.

The Individual Conscience

No rulebook can replace personal conscience. Rules tell us what is prohibited, but character tells us what is right when no one is watching. Small choices, repeated daily, shape who we are and what our organisation becomes.

Our Resolve

True prosperity is not wealth accumulated by any means, but wealth earned fairly and shared responsibly. It is built by people who value the path as much as the destination.

This Vigilance Awareness Week, let us renew our commitment to act with honesty, speak up against wrongdoing, uphold transparency and put the public interest above personal gain. Let us remember that a reputation for integrity is the one asset that cannot be borrowed, bought or rebuilt overnight.

After all, when probity leads, prosperity follows.

WALKATHON 2025









ELOCUTION COMPETITION 2025







School & College Activity





VALEDICTORY SESSION 2025







PRIZE DISTRIBUTION 2025













केन्द्रीय सतर्कता आयोग
CENTRAL VIGILANCE COMMISSION

सत्यनिष्ठा से समृद्धि
PROBITY FOR PROSPERITY

सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा
INTEGRITY PLEDGE

एक नागरिक के रूप में
AS A CITIZEN

— OR —

एक संगठन के रूप में
AS AN ORGANIZATION

प्रतिज्ञा तीन आसान चरणों में लें
TAKE PLEDGE IN THREE EASY STEPS

1. बुनियादी विवरण दर्ज कीजिये / ENTER BASIC DETAILS
2. प्रतिज्ञा की भाषा चुनिये / SELECT PLEDGE LANGUAGE
3. पढ़ें और प्रतिज्ञा लें / READ & TAKE PLEDGE

यदि प्रतिज्ञा पहले ही ले ली है तो वचनबद्धता का प्रमाण-पत्र प्राप्त करें I If already taken Pledge, Get the Certificate of Commitment

प्रमाणपत्र अपने ई-मेल/मोबाइल पर भेजें | Send certificate to your Email/Mobile — OR — प्रमाणपत्र डाउनलोड | Download Certificate

2,03,21,019 नागरिक | Citizen

3,87,195 संगठन | Organization

MSTC LIMITED
CORPORATE OFFICE, NEW DELHI

J-500, 5TH FLOOR, TOWER-J, WORLD TRADE CENTRE,
NAUROJI NAGAR, NEW DELHI - 110029
(011)-65263000

MSTC LIMITED
REGISTERED OFFICE, KOLKATA

PLOT NO.CF-18/2, STREET NO.175, ACTION AREA 1C,
NEW TOWN, KOLKATA - 700156
(033)3501-3200 /3202/3203,
(033) 2340-0000/2340-0011/0012/0013

एमएसटीसी के कार्यालय MSTC'S OFFICES

- नई दिल्ली NEW DELHI
- मुंबई MUMBAI
- कोलकाता KOLKATA
- चेन्नई CHENNAI
- बैंगलोर BANGALORE
- विशाखापत्तनम VISAKHAPATNAM
- बड़ोदरा VADODARA
- हैदराबाद HYDERABAD
- भोपाल BHOPAL
- त्रिवेन्द्रम TRIVANDRUM
- लखनऊ LUCKNOW
- जयपुर JAIPUR
- भुवनेश्वर BHUBANESWAR
- रायपुर RAIPUR
- गुवाहाटी GUWAHATI
- रांची RANCHI
- चंडीगढ़ CHANDIGARH
- पटना PATNA
- नागपुर NAGPUR

www.mstcindia.co.in

एम एस टी सी MSTC

www.mstcecommerce.com